Issue : VIII, Vol. I
VRJFHLL
Half Yearly Research Journal
ISSN 2347- 5285
Dec. 2016 To May 2017

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
१	नागार्जुन के उपन्यासों में अभिव्यक्त कृषक जीवन	पी. डी. राजपूत	१-५
२	नरेंद्र मोहन के नाटकों में व्यक्त सामाजिक संवेदना के विविध आयाम	डॉ. रमेश आडे	६-९
३	समकालीन हिन्दी साहित्य और दलित विमर्श (कहानी और कविता विधा के संदर्भ में)	डॉ. गौतम भाईदास कुवर	१०-२१
४	सर्वेश्वदयाल सक्सेना की समकालीन हिंदी कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक आदि परिस्थितीयॉं	डॉ. राजेंद्र बाविस्कर	२२-२८
५	रामचरितमानस में चरित्र - सृष्टि	दत्तात्रय सायन्ना बिल्लेवाड	२९-३३
६	हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श के विविध आयाम	डॉ. राजाभाऊ पवार	३४-४०
७	धीरेन्द्र अस्थाना के कथा साहित्य में महानगरीय जीवन	अरुण नागोराव मुंडे, डॉ. आर. ए. चौहान	४१-४७

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist. Parbhani

Issue : VIII, Vol. I
VRJFHLL
IMPACT FACTOR 2.72
ISSN 2347- 5285
Dec. 2016 To May 2017 41

7

धीरेन्द्र अस्थाना के कथा साहित्य में महानगरीय जीवन

अरुण नागोराव मुंडे
हिंदी विभाग,
कै. सौ. शेषाबाई मुंडे कला महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी (महाराष्ट्र) भारत

डॉ. आर. ए. चौहान
विभागाध्यक्ष,हिंदी विभाग,
बलभीममहाविद्यालय,
बीड, जि. बीड (महाराष्ट्र) भारत

Research Paper - Hindi

महानगर व्याख्या-

'महानगर' शब्द अंग्रेजी के 'मेट्रोपोलिस' का पर्यायवाची है। 'मेट्रोपोलिटीन' शब्द की उत्पत्ती ग्रीक साहित्य मे मेट्रोपोलिस शब्द से हुई है। ग्रीक साहित्य में इन शब्द का अर्थ है 'मातृनगर।' भारत में चार शहरो को महानगर का दर्जा दिया गया। यथा- दिल्ली, मुंबई कलकत्ता, मद्रास। आज महानगर एक ऐसी भागदौड का पर्याय बन जाता है जहाँ कल- कारखाने तीन- तीन शिफ्ट में चौबीसों घंटे गडगडाते है। मर्करी और नियॉन बतियाँ राम को दनि में तबदील किये रखती है। शटल गाडीयों और बसों में लाखों आदमी इधर से उधर और उधर से इधर चक्कर काटते हुए पडौसियों तक को पहचानता नही। ऐलेक्जेंडर क्लायन ने न्युर्याक में निवास करणे का वास्तविक और एक मात्र लाभ यह है की मृत्यू होने पर यहाँ के निवासी तुरन्त ही सीधे स्वर्ग जायेंगे, क्योंकी उनके भाग्य मे जितने दिन नरक की आग में बिताने को लिखे थे, वे उन्होने इस महानगर में अपनी जिंदगी मे ही बिता लिये।

महानगर के दो परिदृश्य

महानगर में हमें दो दृश्य दिखाई देते है। एक तरफ उँची- उँची अट्टलिकाएँ हैं तो दुसरी तरफ झोपडपट्टी। महानगर की 70 से 80 प्रतिशत जनता ऐसी ही झोपडपट्टी में रहती है। कुछ लोगों को तो झोपडपट्टी भी नसीब नही होती, वे फुटपाथ पर सोते है। बच्चो का खेलने के लिए कोई स्थान नही है और न लोगों की चलने के लिए अच्छी सडके। हर जगह सडकें खुदी हुई है। महानगर में

इतना शोर है कि आदमी जल्दी बेहेरा हो जाना है। असुरक्षा और भय का माहौल चारो तरफ है। भीड इतनी हो कि व्यक्ती अपनी पहचान खो देता है। उसका कीमती वक्त उसके जाने- आने में खर्च हो जाता है। महानगरों में पानी और शौचालयो की सुविधा का अभाव है। लगभग 150 परिवारों के लिए एक नल है। वही हाल़त शौचालयो की है। मुंबई भलेही कान्क्रीट का जंगल माना जाए वहाँ सबसे अधिक दुर्गन्ध है। खुले हुए बडे- वडे नाले, जो कभी साफ ही नही किए जाते, चमडा- उद्योग की सडांध और मछलियों की तीव्र गन्ध से हर आदमी परेशान है। झोपडपट्टीयों में अधिकांश निम्न प्रकार के लोग रहते है। अर्धकुशल मजदुर, फेरीवाले, दरबान, पिऊन, ड्रायवर, वाचमैन, दुकान के नौकर, डाकिया, कन्डक्टर, क्लर्क, घरेलू नौकर, दायियाँ, काममवालियाँ आदि। न झोपडपट्टीयों में कुडा, कीचड, गंदगी, पाखाना, पेशाब, मवाद, सडांध, पीव, स्त्राव, सडते धाव, समुह में पैदा होनेवाली तमाम बुराईयाँ यहाँ पर मौजूद रहती है। सामने मैला बहता है और उसकीके किनारे पर बैठकर आदमी रोटी खाता है और सोता है। जगह की कमी इतनी है कि शारीरिक सम्बन्ध तक खुले आम करने पडते है। ये लोग बडे डॉक्टरों के पास जा नही सकते। वे सडकवाले नाम हमीम से अपला इलाज करवाते है। उँचे- उँचे टॉवर्स को देखकर गरीब आदमी के मन मकं एक हीनता भावना घर कर जाती है। यही भावना उनमें आक्रोश, क्रोध, विद्राह जैसी विकृतियाँ पैदा करती है। 'हिंसा' महानगरो में अधिक पनपती है।

प्रदूषण-

वायू- प्रदुषण और शौर के कारण एलर्जी, हृदय- रोग, माईग्रन, सिर- दर्द पेट का दर्द और न जाने कितनी बीमारियाँ घेर लेती है। फिर भी बदळूभरी वस्तियों मे अनगिनत परिवार नारकीय जीवन बितातें है। बरसे आम सडक के किनारें शैच के लिए बैठते है। यहाँ के पार्क बेरोजगारों के अड्डे हैं। जिन्हे काम नहीं मिलता वे यहाँ पर वीडी फुंकते बैठते है। सोतो हैं कुछ लोग ताश खेलते है मूंगफलियाँ खाते है।

रोजगार

रोजी रोटीकी तलाश में गांव से व्यक्ति महानगर की ओर भागता है और यहाँ आकर बेकारों की भीड, का हिस्सा बना है। कई युवक और युवतियाँ फिल्म जगत के ग्लैमर से आकर्षित होकर मुंबई चले आते है। पर जब हिरो- हिरोईन के सपने टुटने लगते है तब हिरोईने कमाठीउरा की राह पकड लेती है।

घर

महानगरों में सिर छुपाने का संकट इतना अधिक है कि व्यक्ति की अधी तनख्वाइ उसी में

Issue : VIII, Vol. I
VRJFHLL
IMPACT FACTOR 2. 72
ISSN 2347- 5285
Dec. 2016 To May 2017

चली जाती है। मकानों के किराये बढे है किन्तू सुविधाएँ कम है। कई लोग तो बरसों- बरसों तक सस्ते होअलों में टिके रहते है। कई चार- चार पाच एक साथ रहते है। आधी जिन्दगी निकल जाती है पर अपने परिवार के वे ला नही सकते। महानगरों का एक बहुत बडा वर्ग या पुरी दुनिया उन लोगों की है जो महानगर की सडकों के फुटपाथों, दुकानों चबुतरों और पाईपों में रात काटती है। उमस से बेहालोग तो बिना कपडों के और बिना दरवाजों मे सोते रहते है। औरतें सडे आम सडकों के किनारे पाखाने को बैठ जाती है। खाना और पाखाना, दोने जरुरी है। शारीरिक स्त्रियाओं का आत्याधिक अनवार्यता है। इनसे मुक्ती नही मिल सकती।

भीड

भीड महानगरीय जीवन का एक अंग है। भीड में कोईकिसी को नही पहचानता। प्लेटफार्मों पर की भीड इन्सानों की न होकर मक्खियों की भिनभिनाहट सी महसूस होती है। थोडी- थोडी देर में प्लेटफार्म पर ट्रेने पहुंचती है और खाली होने से पहले ही भर जाती है। अगली ट्रेन आने तक उतनी ही भिड जमा हो जाती है। चर्चगेट पर यदि कोई आधा घण्टा बैठे तो लगेगा मुंबई आदमियों का समुद्र है। ऐसी भीड में भी व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस करता है। मिसी का कोई कट गया या लूट गया तो किसी को कोठ चिन्ता नहीं है। जिसके होने, चलने और सांस लेने से कोई फर्क नही पडता। भीड में ट्रेन में चढना आसान नही। कारगील युद्ध में शामिल जवान भी यहाँ हार जायेगा। सबेरे दफ्तर जाने के समय बसें और लोकन ट्रेनें, ठसाठस भरी रहती है और शाम को जब दफ्तर बन्द होने के बाद भी महानगरों को सडकों पर बेतहाशा भीड हो जाती है। जब पकडनेवालों की लम्बी- लम्बे लाईनें लगी होती है। उनमें रतीभर भी आकर्षण नही रहता। दफ्तरों मे प्रेम- संबन्ध भी होते है। बॉस को खुश करणे पर यदि अधिक सुविधाएँ मिलती हो तो प्रेम सम्बन्ध बनाय रखे जाते है। यहाँ जानकर भी कोई कुछ नही कहता।

पारिवारिक स्थिती-

महानगरों मे आकर बसे परिवार अपने संयुक्त रुप को कायम नहीं रख पाते, परिस्थितीवश टुट जाते है। कारण महानगरों की आर्थिक व्यवस्था बडी जटील है। व्यक्ती को महानगर की सभी अनिवार्यताओं के साथ जीना पडता है। महानगरों मे माता- पिता, भाई- बहन के सम्बन्ध नाम मात्र के रह गये है। पति- पत्नी के सम्बन्धो में दरारे पडने लगी है। विवाह संस्था को नकारा जा रहा है। संबंध- विच्छेदों की अधिकता के कारण लोग- बाग विवाह से डरने लगे है। कुछ युवकों का तो यह कहना है कि जब बाजार में ताजा दुध मिलता हो भैस पालने की तबालत कौन करे? ''बढती महंगाई, आवास की समस्या, उच्च शिक्षा का प्रभाव, अपने अधिकारों की पहचान, आधुनिकता का बोध और

बदलते हुए सामाजिक मूल्यों ने मुंबई मे लडकियों की एक बडी संख्या को घरेलू चार दिवारियों से दफ्तरों और बाहरी की दुनिया में पहुंचा दिया है।'' आज की महत्वाकांक्षी लडकियां परम्परावादी पती नही चाहती वह सामाजिक रुतबे वाला लडका चाहती है। ऐसे लडके हर किसी को नही मिलते। महानगर के अधिकांश लडके नौकरी करने वाली लडकी चाहते है। महानगर में सेक्स के लिए सेक्स है, उसका संततिसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

मेहतरमा की एक नाही कहती है,''एक ही आदमी को साथ जबरदस्ती सोते- सोते मैं थक गयी थी। हर बार उसीके साथ मुझ गुनाह लगता। हर बार नया पाने को मेरा मन छटपटाने लगता। मन औरत का है। या मर्द का, उसमें कोई फर्क नही होता। जब मर्द के लिए खुली छूट है तो औरत के लिए क्यों नही?'' महानगरीय जीवन में इतनी कुण्ठाएँ, उलझने है, जो मनुष्य के जीवन को दुभर कर देती है। उसकी बोझ से दबा युवा वर्ग एक तनाव से गुज रहा है पर नही चाहता की विवाह उसे और बढाएँ।

महानगरों में अनेक नर- नारी शादीशुदा होते हुए भी अपने सासनात्मक संबन्ध किसी और से बनाए रखते है। महानगर में नर- नारी के मिलन की काफी सुविधा है। अकेलेपन की ऊब मिटाने के लिए संगी- साथी कहीं भी क्लब में, होटल में, या सागर किनारे मिल सकते है। किसी को कानों खबर नही होती। परिणाम तलाक बढ रहे है और परित्यक्ताएँ भी बढ रही है। कामकाजी महिलाएँ अपनी नौकरी टिकाए रखने के लिए बॉस से सावधानता रखती है। महानगर में बस एक ही वस्तु अहू है, वह धन अर्जित करना और उसके लिए जैसे भी बन पडे, जो भी रासता मिले, अख्तियार करना। बिना विवाह संस्था के भी स्त्री बिना पति के और पति बिना पत्नी के यौन सुख पा सकता है। महानगरों में पढाई के हेतू आयी कई लडकियाँ और स्त्रियां ऐसी मिलेगी, जिनके विवाह के पूर्व और विवाहेत्तर सम्बन्ध कई पुरुषों से है।

परिवेश

महानगर का परिवेश खुद ऐसा हो गया है कि हर व्यक्ति तनाव में जी रहा है। अनव्याही कुमारी माएँ अबैध बच्चे, टुटे हुए घर, दुर्दशा के शिकर बुढे, रोज की होती दुर्घटनाएँ, यौन अपराध, स्कुल से भागे बच्चों का जेबकतरों में परिवार्तित होना आदि बातों से व्यक्ति में तणाव निर्माण होता है। दुसरी बात भीड से भी वह अकेला होता है। कोई उसे पहचानता नही है। महानगर ने सबसे जबरदस्त आघात मनुष्य पर ऐसा कर दिया है कि वह अपनी 'पहचान' या 'आईडेंटीटी?' भूल गया है। इस महानगर में रहनेवाला आदमी महसूस करता है की वह कितना असहाय्य और दयनीय है। इसकी अगली कडी है। खोखलापन। इस खोखलापन के कारण उसमें से उत्साह समाप्त हो गया

है।

मानसिक स्थिती-

महानगर में निरर्थकता, अकेलापन और ऊब हर व्यक्ति को भोगने ही पडते है। हर आदमी को लगता है कि उसके अन्दर एक वैक्युम पैदा हो गया। कुण्ठा और अकेलापन तो हर किसी को होता है। महानगर में सुख मिलता है पर वह सुख सिकुडा हुआ और बोना होता है। वह इतना कुरुप होता है कि किसी आनन्दका प्रेरणास्त्रोत नहीं बन सकता। महानगरीय जीवन में सदस्य होने पर भी बेगानापन की मानसिक स्थिती बन सकती है। घर में ही लगातार टुटने की स्थिती बनती है तब व्यक्ती आत्महत्या की सोचता है जिन्दगी यदि मौत से बहतर हो जाती है तब व्यक्ती आत्महत्या की और बढता है। कई बार टेन्शन इतना अधिक हो जाता है की व्यक्ती पागल बन जाता है।

महानगरों में व्यक्ति को रहने का स्थान मिला नहीं। इसलिए वह अपनी पत्नी को गांव में ही छोड आता है। ऐसे व्यक्ति अपनी कामभावना की पूर्ती के लिए वेश्याओं के पास जाता है। महानगरों में वेश्याओं की कोई कमी नहीं है। सस्ती से सस्ती लेकर महंगी से महंगी वेश्याएँ प्राप्त होती है। कई पति तो अपनी पत्नी से वेश्यावृत्ती करवाते है। कॉल गर्ल, मॉडल, रिसेप्शनिस्ट, ब्युटीशीयन, एअरहोस्टेस जैसी उँचे दर्जे की नारियो को भी पैसो का लालच इस पेशे में खींच लाता है। महानगर में आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, निर्धनता, पारिवारिक विघटन आदि तत्व इतने अहम है कि मनुष्य को मनुष्य नही रहने देते। धन कमाने की लालसा से वे अनैतिक से अनैतिक काम करते है। संबंधो का बार- बार टुटना, निरन्तर भाग दौड, एक रसता, थकान और ऊब महानगर के व्यक्ति के निरन्तर तनाव में जीने को अभिशप्त करती है। वह तनाव को दुर करने के लिए कई अन्य तरीके अपनाता है, फिर भी तनाव से मुक्ती नही मिली, तब मनोवैज्ञानिक केस बन जाता है। ऐसे केसेस दिन प्रतिदिन बढते जा रहे है।

झुग्गी झोपडियाँ

कई उँचे- उँचे टॉवर ऐसे स्थानों पर बनाए गये है, जहाँ से नीला समुद्र अलसाये भाव से पडा रहता है। समुद्र किनारे दुर तक फैली रेत पर झोपड पट्टीयों की लम्बी कतार एक क्रुर मजाक की तरह थी। जैसे ही बिल्डिंगे बनती है झोपडपट्टीयाँ बढने लगती है। अधिकांश गांवो से लोग आकर यहाँ बस जाते है झोपडपट्टीयाँ बढने लगती है। अधिकांश गांवो से लोग आकर यहाँ बस जाते है महानगर पालिका की और से उन्हे तोडने के आदेश दिय जाते है। तब ऐसे दृश्य महानगरों में अक्सर, दिखाई देते हैं। यथा

''समुद्र किनार रेतीली जमीन पर झोपड- पट्टी की कतार से अजीबसा शोर उठ रहा था।

हवा से कुछ लाठीयाँ लहराती दिखाई दे रही थीं। सहसा झोपडियों के टीन- टप्पर अन्न की आवाज के साथ इधर- उधर पटके जाने लगे। झुग्गियों की पूरी आबादी जैसे सडक पर आ गयी थी। लोग दोनों हाथ उठाकर चिल्ला रहे थे, औरतें चीख रही थी जैसे कोई युद्ध हो रहा हो। पल- भर को मुझे लगा, किसी बडे बजट की फिल्म की शुटींग तो नही हो रही। शुटींग कई बार सुबह- सुबह होती थी, पर शार जितना दर्दीला और वास्तविक रुप लेता जा रहा था, उससे लगा की कुछ घटित होने वाले है।

आत्महत्या

महानगरों मे आत्महत्याएँ अधिक होती है। उसका कारण क्या है और कौन आत्महत्याएँ करता है? और कौन नही कर सकता, इस पर 'समय एक शब्द नही है' उपन्यास के प्रारंभ में धीरेन्द्र अस्थाना जी ने अपने विचार में प्रस्तुत किये है। यथा- ''जिन्दगी के फिसल जाने के बाद तुम्हारे पास आत्महत्या के तर्क के अलावा भी कुछ बच सकता है क्या? और आत्महत्या तुम कर नही सकते क्योंकी आत्महत्या के लिए जिस कलेजे की जरुरत पडती है, वह तुम्हारे पास कहाँ है? अगर आत्महत्या कर लेनेवाला कलेजा तुम्हारे पास होता तो तुम अब तक हत्याएँ न कर देते?

टगर तुनक आत्महत्या या हत्या करने की चाहना बहुत शिदत से कभी भी होती और असफल रहे होते तो उसके चेहरे पर उतरते इस सुसत- से अंधेरे के साथ तुम्हारा रिश्ता अपरिचय और तटस्थता का ना होकर संवेदना के स्तर पर अंतरंगता तक फैला हुआ होता। आत्महत्या करना आसाने नही, परंतु महानगरों के टैन्शन इतने अधिक है कि आदमी आत्महत्या का रास्ता अपनाता है।

पागलपन

नायक को राजधानी में एक नौकरी मिल गयी थी, परन्तू पाँचवे महिने में ही उसे निकाल दिया गया था। कारण उसके दिमाग की किसी एक नस का सिरे से अनुपास्थित होना। पेशाब करने वह बार- बार जाता था। ताकि उसे बिडी पीने को मिले, परंतु वहाँ की तिखी दुर्गंध उसबके फेफडों में बेरोक टोक घुसती थी और उसे हमेशा यह भय लगा रहता था कि उसे कैंसर या तपेदिक न हो जाए। एक दिन बिना किसी कारण के वह दफ्तर में ही आपने असिस्टेंट सेल्स डायरेक्टर के सामने तेज ठहाके लगाता है तब इस जुर्म में उसे नौकरी से निकला दिया जाता है।

दफ्तर में उन्मुक्त ठहाके लगाने का उसका यह पागलपन महानगरों के परिवेश का परिणाम है। ''अचान एकदम अचानक बाथरुम की नसें तोडती दुर्गन्ध, दीवारों पर बीभत्स तरीके से गुंथी पीली लकीरों का जाल और उसमें फंसे हुए बॉस की बदहवास सुरत उसके दिमाग में अचक तरीके से

उतर आयी। इसी समीकरण के दिमाग में तैरते ही उसका मुंह खुल गया और दिवारों को झिझोड़ते, दफ्तर को चौकांते और कर्मचारीयों की हिलाते उसके उन्मुक्त ठहाके यकायक बिखरने- फैलने लगे। ऐसे पागलों को दफ्तर में नौकरी कौन देगा?

वहाँ से नायक कलकत्ता पुहँच जाता है। वहाँ पर उसकी मुलाकात संगीता बैनर्जी से होती है। उन दोनो के सम्बन्ध उस हृदयतक पहुंच गये थे कि वह उससे संभोग करने के लिए तैयार थी। पर क्या हुआ?

''संगीता को (संभोग के लिए) कोई एतराज भी नही था, मगर ऐन वक्त पर, जब उत्तेजक स्थितीयाँ अपने चरम पर थीत्र, वह यक- ब- बक बर्फ टुकडे मे तब्दील हो गया था और संगीता की आग जल- जल कर धुआँ होती गयी थी। संगीता तो चौंकी ही थी, वह खुद भी कम आश्चर्य चकित नही था।... जब दुसरे रोज भी घटना की पुनरावृति हो गयी तो संगीता का शक यकीन में बदल गया और तीसरे रोज वह कलकत्तें में नही पायी गयी।''

एक स्थान पर ऐसा उल्लेख है जिससे पता चलता है कि नगर किसके लिए बने है। आशु ने भवन दा से कहा था तुम्हे जाडे में यहाँ आना चाहिए था। ''सीजन में यह शहर उराखझड का उच्चवर्गीय वेश्यालय बन जाता है। इस प्रकार की दशा आजकल महानगरों की हो गयी है।

संदर्भ संकेत :-

1. धीरेन्द्र अस्थाना, हलाहल, डॉल्फिन बुक्स, नई दिल्ली
2. धीरेंन्द्र अस्थाना, नींद के बाहरए वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. धीरेंद्र अस्थाना, देश निकाला, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016
Impact Factor : 4.1625(UIF)2230-7850

नारी समस्या की दास्तान है- 'पचपन खम्भे लाल दिवारें'

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले

एस. एस. एम. कॉलेज, गंगाखेड, जि. परभणी. (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना : आधुनिक युग में नारी चेतना में परिवर्तन आया है; इसका श्रेय स्त्री रचनाकारों को ही जाता है। इन महिला रचनाकारों ने नारी के उस रूप को सामने लाया है, जो .....

Editor - In - Chief - H. N. Jagtap

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

Indian Streams Research Journal

ISSN NO:-2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Vol.- 6, Issue - 5, June -2016

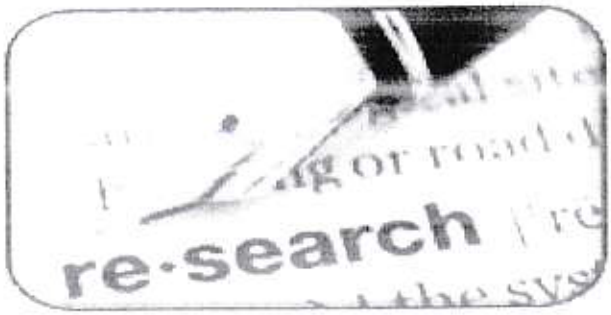

Sr. No	Title And Name Of The Author (S)	Page No
1	**Indian Real Estate Sector- A Journey From Non-Regulation To Regulation** Isha Nasa and Priti Rai	1
2	**A Study On Awareness Level Of Environmental Pollution Among Secondary School Students** Ashokkumar B. Surapur	11
3	THE PRESENT STUDY OF NOVEL TO BAKHA'S Dr . Sanjay Thorat	18
4	IMPACT OF THE GOVERNMENT POLICY ON THE COST OF SUGAR PRODUCTION Dr. A.G.POLICEPATIL	22
5	Blended Learning In Education Nidhi Kakkar.	32
6	**Role Of Information And Communication Technologies (ICT) In Knowledge Management** D. R. Barahate and Sohel Khan	40
7	नारी समस्या की दास्तान है–'पचपन खम्भे लाल दिवारें' प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले	43

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले

आधुनिक युग में नारी चेतना में परिवर्तन आया है, इसका श्रेय स्त्री रचनाकारों को ही जाता है। इन महिला रचनाकारों ने नारी के उस रूप को सामने लाया है, जो सदियों से घर में कहीं दबा पडा था। नारी की मानसिकता, संवेदना, घुटन और पीडा को महिला रचनाकारों ने जिस गहन अनुभूति से अभिव्यक्ति दी है उससे नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदल गया है।

उषा प्रियंवदा महिला रचनाकारों में अपना अद्वितीय स्थान बना चुकी हैं।

उपन्यास में व्यक्ति, परिवार, स्त्री–पुरुष संबंध आदि का सहजता से चित्रण देखने मिलता है। उपन्यास की नायिका सुषमा रूढीवादी नारी है, वह त्यागमयी भारतीय नारी के रूप में चित्रित है। आधुनिक युग की भारतीय नारी को समाज की नित नई परिस्थितियों से जाने अनजाने अंदर ही अंदर घुटना पडता है। नारी की अन्तर्मन की व्यथा का अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण उपन्यासकार उषा प्रियंवदा जीने अंकित किया है। सुषमा अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए समय से पहले प्रौढ बन गयी है। अपनी कोमल संवेदनाएँ, भविष्य के सुंदर सपने, अपनी इच्छाएँ इन सभी का गला घोंट देती है। सुषमा नोकरी करती है, उसके वेतन से ही घर चलता है; इसलिए माता–पिता भी उसके विवाह की बात को कोई–न–कोई कारण या खोट निकालकर टाल देते हैं।

सुषमा उसके पडोसी नारायण को दिल दे बैठती है, परंतु समय आने पर परिस्थितियों का सामना न कर पाने के कारण विवाह की कल्पना सुषमा के लिए एक सपना बनकर रह गयी।

उसके जीवन में निल के आने से उसका बिखरा जीवन फिर से खिल उठता है, उसमें चेतना का संचार होने लगता है किंतु फिर एक बार अपने अधुरेपन को पूरा नहीं कर पाती। सुषमा के जीवन के सुनेपन में कुछ समय के लिए नील हरियाली अवश्य लेकर आता है। नील से मिलने के बाद सुषमा के रेगिस्तान से तपते जीवन में शीतलता जरूर आती है, किंतु यह शीतलता अधिक दिनों तक टिक नहीं पाती क्योंकि समाज ने, उसके जनने लोगों ने उसे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराया है। यही कारण है कि अपनी अनमोल यादों को दिल में समेटकर नील से दूर जाने का निर्णय लेना पडता है।

उपन्यास की नायिका सुषमा अजनबीपन के कारण अपनी दारुण अवस्था को बदलने में कामयाब नहीं हो पाती है। अपने जीवन में आयी हुई उलझनों को सुलझाने में वह असमर्थ बनती है। छात्रावास के पचपन खम्भे और उसकी लाल दिवारें उन परिस्थितियों के परिचायक हैं, जिनमें रहकर सुषमा को ऊब और घुटन का तीखा एहसास होता है। वह उससे मुक्त नहीं हो पाती या होना नहीं चाहती।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें'– नारी समस्या

हिन्दी के अनेक रचनाकारोंने नारी की समस्याओं को ध्यान में रखकर अपनी रचनाओं में इन समस्याओं को पाठकों के सामने लाने का भरसक प्रयास किया है। उषा प्रियंवदाजीने आधुनिक युग की सुशिक्षित नारी और

[illegible] जिन्दगियों का उपन्यास में अंकन किया है। इन्हें आधुनिक और शिक्षित नारी के जीवन की समस्याओं, विवशता और उसके अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए संघर्षशील नारी का चित्रण किया है। [illegible] पाठक को नारी–जीवन तथा उसकी समस्याओं के प्रति सोचने के लिए बाध्य करता है।

जीवन के बदलते दृष्टिकोण के साथ पारिवारिक संबंधों में भी बदलाव दिखाई देता है। जीवन मूल्यों के साथ रिश्तों में आ रहे बदलाव को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सामाजिक समस्या के साथ–साथ पारिवारिक समस्याएँ भी आज की आधुनिक नारी के सामने [illegible] खड़ी हैं। 'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा सुशिक्षित और बुद्धिजीवी नारी है। सुषमा अपने परिवार के लिए अर्थोपार्जन की साधन मात्र बनकर रह जाती है। सुषमा के माता–पिता उसे जीवन में दुःखदायी स्थिती उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी हैं। भाई–बहनों की इच्छापूर्ति की वह साधन मात्र है। नारी को पारिवारिक जिम्मेदारी संभालते–संभालते कभी–कभी अपने अस्तित्व, अपनी भावनाओं को त्यागना पड़ता है। पारिवारिक समस्याओं के कारण ही सुषमा की जिन्दगी बिखर जाती है। सुषमा पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी के कारण वह अपने आपके बारे में कभी सोच ही नहीं सकती–सुषमा परिवार के कारण भरण–पोषण के लिए नौकरी करती है। उसके माता–पिता उसके विवाह की नहीं सोचते, इसके विपरित छोटी–बेटी नीरू के विवाह की जिम्मेदारी भी सुषमा पर ही डाल दी जाती है। नील के सामने अपनी पारिवारीक समस्या को स्पष्ट करते हुए सुषमा कहती है– "पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीडित बापू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है।" परिवार की आर्थिक कमजोरी सुषमा का जीवन तहस–नहस कर देती है। अपने परिवार के लिए वह सब कुछ करती है, फिर भी वह अपने ही परिवार में उपेक्षित रह जाती है।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा परिवार का दायित्व उठाते–उठाते इतनी अकेली हो गयी है कि उसे कुछ भी अपना नहीं लगता। अकेलेपन की स्थिती को उपन्यासकार इस प्रकार व्यक्त करती है– " अपने परिवार का सारा बोझ अपने उपर लिए सुषमा काँपने लगती। तब वह चाह उठती कि दो बाँहे उसे भी सहारा देने को हैं, एक नीरवता में कुछ अस्फुट शब्द उसे भी सम्बोधन करें।" सुषमा अपने अकेलेपन के कारण बेबसी में अपनी सहेली से कहती है–"आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर इस कॉलेज में आओ तब भी तुम मुझे यहीं पाओगी। कॉलेज के पचपन खम्भों की तरही स्थिर, अचल।" इसी उपन्यास की एक और पात्र मिस शास्त्री भी इसी समस्या का शिकार हैं। अकेलेपन की त्रासदी के कारण व्यक्ति कभी–कभी विक्षिप्त बन जाता है, इसका ज्वलंत उदाहरण मिस शास्त्री हैं।

सुषमा अकेलेपन के कारण अविवाहित है फिर भी वह नील से संबंध स्थापित करती है। जीवन की नीरवता ने उसका जीना दुश्वार कर दिया है। शिक्षित नारियाँ अपने जीवन में आनेवाली मानसिक यन्त्रणा को विवशतापूर्वक झेल रही है।

छात्रावास के पचपन खम्भे और लाल दिवारें उन परिस्थितियों के प्रतिक है जहाँ सुषमा को ऊब, घुटन का तीखा अनुभव होता है। वह परिवार से दूर रहकर नोकरी करती है। भौतिक सुविधाओं से वह बहुत सुखी है लेकिन स्वयं कुँवारी रह जाने की कड़वाहट को वह भूल नहीं पाती। अपनी आशाओं एवं आकांक्षाओं की आपूर्ति से उत्पन्न मानसिक द्वंद्व के कारण उसकी अवस्था करुणा से तरबतर हो जाती है। उसे लगता है– "मैं। केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिंदगी के लिए ढाल लिया है, तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को उन्हीं प्राचीरों में बंदी कर लूँगी।" सुषमा को नील का साथ पसन्द तो है फिर भी वह उसे अस्वीकार कर देना पड़ता है। मजबूर सुषमा को समाज एवं परिवार के कारण अपनी जिम्मेदारीयों के कारण अपने प्रेम का त्याग करना पड़ता है। नील के जाने के बाद वह टूट जाती है। वह अकेली रह जाती है और इस अकेलेपन को वह स्वीकार कर लेती है।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की कथा रोमांटिक प्रेम की कथा है, जिसमें अवसाद की गहरी छाया के साथ मधुरता और विफलता का मीठा दंश शामिल है। सामाजिक स्थिती में बदलाव के साथ प्रेम और विवाह के संबंध में भी काफी बदलाव आए हैं परंतु नारी स्वतंत्र विचार रखते हुए भी अपनी जिंदगी को अपने तरीके से जी नहीं सकती। जेष्ठ पुत्री होने के कारण परिवार की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधे पर उठा लेती है। उसके अन्तर्मन में अपना घर बसाने की इच्छा है परन्तु उसकी यह इच्छा पुरी नहीं हो पाती। युवावस्था में सुषमा पडोसी नारायण के प्रति आकर्षित होती है, उसके साथ विवाह के सपने देखती है परंतु नारायण की शादी दूसरी लडकी से होती है। आज वह अपने अतित को याद करती है तो दुःख के बोझ से काँपने लगती है। आज सुषमा की आयु तैंतीस साल है। उसकी यह उम्र न तो विवाह के योग्य है न ही प्रेम करने योग्य। उसके जीवन में अचानक नील आता है, जो उससे पाँच साल छोटा है। नील के आने से सुषमा को जीने की नई

उम्मीद मिलती है लेकिन सुषमा के जीवन में फिर [illegible] आती है [illegible] बीच [illegible] रह जाती है। [illegible] नील से [illegible] सुषमा अपने प्रेम को चाहकर भी प्राप्त नहीं कर पाती।

सुषमा नील से [illegible] बड़ी है इसलिए मीनाक्षी के पूछने पर भी वह नील से शादी क्यों नहीं कर सकती? तब सुषमा कहती है– "प्रेमिका और पत्नी में बहुत फर्क होता है। फिर मैं नहीं चाहती कि नील के मन में कभी भी यह विचार आये कि उससे गलती हुई है।" उम्र के कारण पति–पत्नी में मतभेद होकर बाद में उनके संबंधों में दरार पड़ सकती है।

उपन्यास की नायिका सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अविवाहित रहती है। पक्षाघात से पीडित पिता के उत्तरदायित्व से वह चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाती। विवाह योग्य उम्र होने पर भी पिता उसके विवाह की बात नहीं करते। माँ को छोटी बेटी मीरू के विवाह की चिंता है। यौवनावस्था में उठनेवाली तरंगे सुषमा के मन को उद्वेलित कर देती है। नारायण का दूसरी लडकी से विवाह होना उसकी जिंदगी में दूरी उत्पन्न कर देता है। नील का जिंदगी में आना, जीने की आशा को पल्लवित करता है लेकिन वह नील से भी विवाह नहीं कर पाती।

उपन्यास की नायिका सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करते हुए अपने आपको भूल गयी है। उसका जीवन एक रेगिस्तान बन गया है। उसके जीवन में नील का प्रवेश होता है। सुषमा सामाजिक डर और आर्थिक अभाव के कारण अपने प्रेम को सफल नहीं बना पाती। उपन्यास की दूसरी पात्र स्वाती प्रेम में सफल न होने के कारण आत्महत्या करने की कोशिश करती है।

भारतीय परिवेश में नारी सदियों से शोषित है। अपने अधिकारों से वंचित नारी के हिस्से हमेशा कर्तव्य ही आये हैं– माँ के रूप में, बेटी के रूप में तो कभी पत्नी के रूप में। उपन्यास की नायिका सुषमा नोकरी करती है, घर की जिम्मेदारी भी उठाती है; परिवार का आर्थिक बोझ उसी पर आ जाता है। सुषमा इतनी मजबूर हो जाती है कि चाहते हुए भी अपनी इच्छा के अनुसार जिंदगी जी नहीं पाती। नील उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है, तो वह जवाब देती है– "यह कॉलेज, ये खम्भे, मेरी डेस्टिनी हैं, मुझे यहीं छोड दो।" इस प्रकार सुषमा बेटी का फर्ज अदा तो करती है परंतु अपने जीवन को अंधकार में ढकेल देती है। परिस्थितीयों से लडने की बजाय हथियार डाल हार मान लेती हैं।

उपन्यास की नायिका सुषमा सामाजिक समस्या के कारण नील को चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाती। नौकरी के क्षेत्र मे उसपर अनेक लाँछन लगाये जाते हैं; उसे वार्डन के पद से हटाने की भी पूरजोर साजिश की जाती है।

उपन्यास की नायिका सुषमा आर्थिक समस्या की शिकार है। सुषमा पर परिवार की जिम्मेदारी है इसी कारण उसके विवाह की कोई बात नहीं सोचता ना ही करता है। वह परिवार के लिए अपने व्यक्तित्व, अस्तित्व और कोमल भावनाओं को समेट लेती है। वह परिवार के लिए अपने प्रेम की बलि तक चढा देती है। परिवार की आर्थिक स्थिती बिगड जायेगी इसलिए अपनी इच्छाओ का गला घोट देती है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं– उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में भारतीय नारी और उसकी समस्याओं को एक पर्याप्त प्लेटफार्म मिला है। उषा प्रियंवदा जी ने नारी के जीवन की समस्याओं को बडी लगन से आत्मसात किया है इसी के साथ बडे ही सुगमता से नारी की समस्याओं को चित्रित किया है। नारी की समस्याओं को 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में बडी सजीवता, सहजता और मार्मिकता के साथ उजागर किया है। उपन्यास के नारी पात्र अपनी अपनी अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सजग हैं। कहीं नारियाँ हारती है तो कहीं पर विद्रोह करती हुई जीत जाती है।

संदर्भ ग्रंथ –

- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे
- उपन्यास का स्वरूप – डॉ. शशि भूषण सिंहल
- पचपन खम्भे लाल दिवारें – उषा प्रियंवदा

ISSN: 2454-5503

CHRONICLE

OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

VOL. 2 NO. 2 April 2016

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

Impact Factor: 3.012 (IIJIF)

Chief Editor
Dr Kalyan Gangarde
Director, Centre for Humanities and Cultural Studies

Executive Editor
Dr Grishma Khobragade
Asst. Prof., Birla College, Kalyan (W)

Co- editors
Pandurang Barkale (Mumbai)
Dr. Sadhana Agrawal (Gwalior)
Dashrath Kamble (Kalyan)
Bharat Gugane (Nashik)
Sachin Bhumbe (Mumbai)

CENTRE FOR HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES
KALYAN (MAHARASHTRA)

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist. Parbhani

CONTENTS

From the Editor's Desk | 4

1. Challenges In English Language Proficiency For Engineering Students / Seema Chaurasiya | 5

2. They That Sit In Darkness By Mary Burrill As A Representative Tragedy Of African American Women / B.N. Wakchaure | 9

3. Re-Envisioning Gender Through The Double/Twin Myth In The God Of Small Things / Harpreet Kour | 12

4. The Tradition And Modernity In Shashi Deshpande's Novels / D. D. Kamble | 16

5. Bapsi Sidhwa's *The Pakistani Bride* : A Study / Bharat Deshmukh | 23

6. Awareness About Mutual Fund Investment Among Teachers Of Degree College (With Special Reference To Kalyan-Dombivli Region) / Jyoti H. Pohane | 29

7. Satyagrah, Social Equality And Dr. B. R. Ambedkar / Dr. Madhav More | 34

8. उत्तरदायित्व व पारदर्शिता तथा सूचना का अधिकार / डॉ. हेमा जैन (मेहता) | 37

9. मराठवाड्यातील उच्च शिक्षणाची सद्यस्थिती व RUSA / डॉ.एम.बी.थोंडगे | 40

10. काश्मीर प्रश्न आणि अंतर्गत सुरक्षितता: एक चिकीत्सक अध्ययन / सोनवणे जी.एन. | 42

11. महात्मा गांधी आणि ग्रामोद्योग एक सुक्ष्म अभ्यास / प्रविण घोडविंदे | 45

12. मुनिश्री तरुण सागरजी महाराजांचे धर्म विषयक विचार / प्रा. सातपुते साहेब बाबुराव | 50

१२.

मुनिश्री तरुण सागरजी महाराजांचे धर्म विषयक विचार

प्रा. सातपुते साहेब बाबुराव
तत्त्वज्ञान विभाग
कै.सौ. शेषाबाई सीताराम
मुंढे कला महाविद्यालय, गंगाखेड

मुनिश्री तरुण सागरजी महाराज हे क्रांतीकारी राष्ट्रसंत आहेत.ते कटु प्रवचनकार म्हणून प्रसिद्ध आहेत.लहानपणापासून त्यांच्या अंगी क्रांतीचे बीज दिसून येते.संत, मुनि परंपरेने धार्मिक तत्त्वज्ञानाला अमुल्य ठेवा मानलेला आहे.धार्मिक तत्त्वज्ञानातूनच ईश्वर प्राप्तीचा मार्ग मिळून असतो आणि त्याद्वारेच आत्मोन्नती साधली जाऊ शकते.असा विश्वास संत, मुनिनी ठेवलेला आहे.धर्मामध्ये अनेक संकल्पना या अज्ञानातून आणि अंधश्रध्देतून मागल्या जातात.अशा अज्ञानी आणि अंधश्रध्दा रुढी संकल्पनांना दुर करण्यात संतांचा मोठा हातभार असतो. मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज देखिल एक डोळसपणे विचार करणारे क्रांतीकारी राष्ट्रसंत आहेत त्यानी सुध्दा आपल्या धार्मिक विचारात अंधश्रध्दा, अज्ञानमुलक संकल्पना, रुढी परंपरा व विचार प्रणाली यांना नाकारलेले आहे.

धर्माचा अर्थ :

धर्म समजण्यासाठी त्याचा अर्थ स्पष्ट करणे महत्वाचे ठरते.धर्माला इंग्रजीमध्ये Religion असे म्हणतात.Religion हा शब्द लॅटीन भाषेतील Religare या शब्दापासून बनलेला आहे.Religare म्हणजे एकत्र बांधणे असा त्याचा अर्थ होतो मानव व ईश्वर यांना एकत्र बांधणे किंवा त्यांच्यात संबंध जोडणे हे या ठिकाणी अपेक्षित आहे.

धर्म संकल्पना :

मानवी जीवनात 'धर्म' संकल्पनेला महत्त्वाचे स्थान आहे.धर्म या शब्दाला वेगळे करुन मानवी जीवनाचा विचारच होऊ शकत नाही.संपूर्ण जीवन धर्माने प्रभावित झाल्याचे मानवी जीवनाच्या इतिहासात पाहावयास मिळतात.धर्म संकल्पनेत निरंतर बदल होत राहिले तरी या संकल्पनेचा मूळ गाभा अतिशय समृध्द आणि उन्नत होत गेल्याचे दिसून येते.

धर्माच्या व्याख्या :

१. प्रवृत्ती निवृत्ति रुपो धर्म: आद्य शंकराचार्य
२. यतो अभ्युदयानी : श्रेयस सिध्दी : सधर्म : १ - महर्षी करणाद
३. चोदना लक्षणा ऽ र्थो धर्म : जैमिनी

धर्माच्या अनेक व्याख्या करण्यात आलेल्या आहेत भारतीय दर्शन परंपरेत देखिल धर्माच्या व्याख्या करण्याचा प्रयत्न अनेकांना केल्याचे दिसून येते.वरील व्याख्येवरुन धर्माचे स्वरुप आपणास समजून घेता येईल.

धर्माचे ध्येय :

मानवी जीवनामध्ये धर्माची पवित्रता आणि शुध्दता अनेकदा सिध्द झाल्याचे पाहावयास मिळते.धर्माने मानवाला सुखी आणि समृध्द करण्यासाठी प्रयत्न केलेले आहेत.व्यक्तीमध्ये दया, क्षमा, शांती, नैतिकता, कर्तव्य दक्षपणा, चारीत्र्य संपन्नता व सहानुभुती अशी मुल्य रुजविण्याचे महत्त्वाचे कार्य धर्माने केलेले आहे.मानवी जीवनातील संपूर्ण षड्रिपू नष्ट करण्यासाठी धार्मिक विध महत्वाची बाजू मांडताना दिसतात.काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आणि मत्सर इत्यादी सारख्या षड्रिपूवर मात करण्यासाठी धार्मिक विचार महत्वाची भुमिका बजावतात.

धर्म ही एक अतिशय पवित्र सामाजिक संस्था आहे.यावरुन मानवी जीवनात धर्माची पवित्रता आणि शुध्दता सिध्द झाल्याचे दिसून येते.धर्म एक सामाजिक संस्था म्हणून जेव्हा मान्यता पावते तेव्हा या संस्थेची मानवी जीवनातील आवश्यकता अपरिहार्य ठरते.व्यवहारीक दृष्ट्या सुध्दा धर्म संस्थेची आवश्यकता फारच उपयोगी ठरते.अनेक चालीरिती धर्माच्या नावे समाजात रुढ व दृढ होतात.त्याची कालानुपरत्वे चिकित्सा होणे समाजाच्या दृष्टीने आवश्यक ठरते.

विश्वातील प्रत्येक धर्म हा एका विशिष्ट तत्त्वज्ञानाने युक्त असतो प्रत्येक धर्माचे वेगळे शास्त्र असते.त्या शास्त्रामध्ये त्या-त्या धर्मातील तत्त्वज्ञानाचा उल्लेख असतो.विशिष्ट धर्म आपले विशिष्ट तत्त्वज्ञान प्रतिपादन करुन मार्गक्रमण करीत असतो.

मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज यांचे धर्म विषयक विचार : मुनिश्रींचे धर्म विषयक विचार अतिशय प्रगल्भ, व्यापक आणि सुस्पष्ट आहे.त्यांचे धर्माविषयीचे चिंतन आणि अनुसरण अतिशय शिस्तबध्द आणि काटेकोर आहे.मुनिश्रींच्या मते हृदयाची सरलता हाच धर्म आहे.धर्म ही कोणी लादण्याची वस्तु नसून ती अनंत निर्मल अशी सहज उपलब्धी आहे.व्यक्तित्वातील चैतन्यता म्हणजे धर्म.त्याचप्रमाणे मानवी जीवनात परिवर्तन घडवून आणणारा देखिल धर्मच होय. जीवनाची समग्रता धारण करणे हा धर्माचा मुळ अर्थ आहे.धर्मांच्या पायावरच जीवनाची इमारत उभी राहते.धर्माच्या अभावातून मनुष्यात अपूर्णता येते व मनुष्य नरभक्षक बनतो, असेही ते सांगतात.

मुनिश्रींच्या मते धर्म पुर्ण असो वा अंशिक असो तो जीवनात धन्यता आणत असतो. धर्म इतरत्र कुठेही वास न करता तो व्यक्तीच्या अंत:करणात वास करत असतो. धर्म शोधण्यासाठी बाहेर कुठेही जाण्याची आवश्यकता नाही. असे मुनिश्रींना वाटते. या संदर्भात भगवान महावीर यांच्या उपदेशाचा निर्देश करुन मुनिश्री असे म्हणतात की, "भगवान महावीर कहते है, धर्म को मत खोजो, स्वंय को खोजो, स्वयं को खोजो तो धर्म स्वत: मिल जाएगा । धर्म तो प्रतिबिम्ब की तरह है. प्रतिबिम्ब को पकडने जाओगे तो निराशा ही हाथ लगेगी अपने आपको पकड लो तो प्रतिबिम्ब स्वत: पकड में आ जाएगा "

यावरुन धर्माची मानवी जीवनातील श्रेष्ठता सिध्द होते

मनुष्याला धर्म आदर्शाकडे घेऊन जातो त्याचप्रमाणे मानवी जीवनातील धर्मांचे स्थान हे अतिशय उच्च आहे आणि त्याचबरोबर व्यक्ति चारित्र्य निर्माण करण्याचे सुध्दा धर्मांचे महत्वपुर्ण योगदान आहे. धर्म ही जीवन जगण्याची एक कला आहे. असे त्यांचे मत आहे. धर्म केवळ जगण्याची कला नसुन ती मृत्युची देखिल कला आहे. असे मुनिश्री मानतात. धर्म ही खेळण्याची वस्तू नसून ती आत्मकल्याणाची वस्तु आहे.जे लोक धर्माला आत्मकल्याणाचे साधन म्हणून जीवन व्यतीत करतात.त्यांना धर्म अभय देत असतो.म्हणून धर्माला आत्मकल्याणाचे साधन मानले पाहिजे. असे मुनिश्रींना वाटते.

धर्मामध्ये अद्भुत शक्ति असते धर्माचा एक किरण सारा जीवन प्रकाशमय करीत असतो.जीवनातील सर्व बाबींना धर्म पुलकित करीत असतो.सर्वांना तो स्पर्शून जातो. जीवनामध्ये उत्साह आणि उमंगाचा शिरकाव धर्मांच्या माध्यमातून होत असतो. ज्याप्रमाणे छोटीशी नौका मनुष्याला किनाऱ्यावर पोहचविते. त्याचप्रमाणे अडीच अक्षरी धर्म आत्म्याला भवसागराच्या किनाऱ्यावर नेऊन सोडतो.अर्थात धर्म आत्म्याला परमात्मा बनवितो.

मुनिश्री तरुणसागरजी म्हणतात धर्माच्या अंगिकारातून व्यक्तिचे चारित्र्य निर्माण होते. चारित्र्यवान व्यक्ती हा धर्मपालक त्याचप्रमाणे धर्मोपासक व्यक्ती चारित्र्य संपन्न असतो.म्हणून धर्मांचे योग्य वेळी संस्कार व्यक्तिवर झाले तर त्यातुन व्यक्ती सद्विचारी आणि विवेकी बनते.धर्मच व्यक्तींमध्ये उच्च दर्जाचे मुल्ये रुजवित असतो.व्यक्तिला चारित्र्यशील बनविण्याचे धर्म संस्कार मोलाचे कार्य करतात.धर्मांच्या संस्काराशिवाय व्यक्ति-व्यक्तित तसेच राष्ट्रा-राष्ट्रात चारित्र्य संपन्नता स्थापित होणार नाही.म्हणून धर्मांचे संस्कार प्रत्येकावर होणे गरजेचे असते.

मुनिश्रींच्या मते धर्मांचे स्थान हे अतिशय उच्च दर्जाचे असते.धर्म हा दर्जेदार आणि पवित्र असतो.धर्मांमध्ये संस्थेला नाही तर गुणाला प्राधान्य असते.त्यांच्यामते धर्म हा सत्य आणि असत्य असा नसतो.तर धर्म तो धर्मच असतो.धर्म सुर्यसत्य आहे.त्याला नाकारले जाऊ शकत नाही.दया, प्रेम, अहिंसा व सौहार्द हे धर्मांचे अंगिभूत लक्षणे आहेत.सर्वांच्या आत्म्यामध्ये धर्मांचा आवाज हा एकच असतो.धर्मांचे हृदय हे अतिशय विशाल असते.

मुनिश्री धर्माला युवकाचे शक्तिवर्धक औषध मानतात धर्म हे म्हाताऱ्या लोकांचे औषध नाही तर ती युवकांचे औषध आहे.कारण तारुण्यावस्था आणि धर्म यांचा गहन संबंध आहे.तारुण्यावस्थेत धर्मांचे टॉनिक मिळाल्यास युवकाचे शरीर मन आणि आत्मा हे सुदृढ आणि संयमी बनते.म्हणून तरुणांनी धर्मांचे पुर्णपणे पालन केले तर त्याचा कायाकल्प होण्यास उशीर लागणार नाही. आज तरुणांना धर्मप्रेरणेची गरज आहे. असे म्हणता येते. तरुणांमध्ये धर्म प्रेरणा निर्माण करुन त्या मार्फत धार्मिक अनुभूतीचा विकास साधला जाऊ शकतो.म्हणून धर्म प्रत्येक युवकाचे शक्तिवर्धक औषध आहे असे मुनिश्री मानतात.

मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज हे क्रांतीकारी संत आहेत.त्यांचे विचार अतिशय क्रांतीकारी स्वरुपाचे आहेत कोणत्याही विषयावर अतिशय परखड स्वरुपात विचार व्यक्त करण्याची त्यांची विशिष्ट शैली आहे.याच परखडतेतून त्यांनी धर्म म्हणजे केवळ परंपरा नसून एक प्रकारचा विद्रोह आहे असे मत व्यक्त केलेले आहे.त्यांच्या मते धर्म परंपरा नाही तर तो विद्रोह आहे.

चुकीच्या परंपरापासून मुक्तता हाच धर्माचा प्रादुर्भाव आहे योग्य रीतीने जीवन जगण्याची कला धर्मच

शिकवीत असतो.मुक्तींनी आचरणात येणाऱ्या दुष्ट परंपरा त्यागून योग्य रीतीने जीवन जगणे म्हणजे धर्म परंपरेविषयीचा तो विद्रोह आहे.अनावश्यक प्रथा, रुढी व परंपरा यामुळे मानव गोंधळात अडकून पडतो त्याला त्यावेळी सत्य धर्माचे ज्ञान होते.त्यावेळी तो विद्रोह करुन तो परंपरावर मात करीत असतो.

अशा प्रकारे मुनिश्री तरुण सागरजी महाराज यांनी धर्माचे सत्य व वास्तव स्वरुप सांगितले आहे.

ISSN 2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A Peer-Reviewed Multi-Disciplinary International Journal

Volume : 6 Issue : 3 September, 2016

Deepak Nanaware
Editor-in-Chief

www.contemporaryresearchindia.net
Impact Factor : 0.956 (GIF)

ISSN-2231-2137

CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA

A PEER-REVIEWED MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL JOURNAL

Volume : 6 Issue : 3 September, 2016

Impact Factor : 0.956 (GIF)

Editor-in-Chief
DEEPAK NANAWARE

Advisory Editors
Annie John
T. N. Kolekar
N. B. Pawar
J. D. Jadhav
H. K. Awatade

Co-Editors
Mirza Hashambaig
Anil Kamble
Md. Irshad
G. D. Birajdar
Rajshekhar Shinde
Sasikant Reddy

Advisory Board
Vaishali Pradhan
Lalit Khandare

Editorial...

It is a matter of pleasure to publish current issue of Contemporary Research in India (2231-2137). Publishing regular issues of the journal and circulating it among the research fraternity is a matter of proud and accomplishment for us. The reason to be proud and pleasure is that the activity provides an exposure for the research articles on various topics from different disciplines, which would provide further scope for budding researchers. The research basically aims at exploring new avenues for the betterment of livelihood of people. For the endeavour to carry out research and explore something new is relative of different race, caste, creed and gender.

The issue has been very carefully put together covering a range of articles ranging from science, social science to Arts faculty. The methodical and scientific research is always promoted from our side. The methodical oneness is promoted in order to benefit the research scholars to understand their findings and problems faced. We hope we would be able to serve research fraternity in this noble time immemorial.

Dr. Deepak Nanaware
Editor-in-chief

Contemporary Research in India is a peer-reviewed Multi-Disciplinary International Journal with quarterly periodicity aims at promoting research in Humanities, Social Sciences, Sciences, Engineering, Law and Education and so on. The Journal will also help to explore creative talents and bring out creative writing in the form of research articles, reviews, poetry, short story etc. with a view to establish, understand and maintain harmony among different disciplines and spheres. Above all, emphasis and priority will be given to pure research as it will mould the world in future. The purpose is to disseminate an authentic body of research which further promotes knowledge, understanding and an intellectual exercise among the research fraternity.

Contributors are requested to forward their writings to Deepak Nanaware, Editor-in-Chief and Publisher, Contemporary Research in India. The articles will be Published after thorough review by experts.

ADDRESS FOR CORRESPONDENCE:
Deepak Nanaware, Editor-in-Chief, 129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur-413001 (Maharashtra, India)
e-mail: researchspectrum@gmail.com,
bizcraftpublication@gmail.com
deepak_nanaware2003@yahoo.com
Cell: 09637335551, 09665950097

Subscription Details
- Single Copy Rs. 375/-
- One Year Rs. 1500/-
- Life Membership 5000/- (5 Years) (Individual and Institutional)

Copyright : Deepak Nanaware

CONTENTS

Sr. No.	Article	Page No.
1	Effect of Sowing Windows on CO2 Concentration in Potato *V. A. Apotikar and A. V. Solanke*	01
2	New International Financial Order – Need of the Hour *Prof. Ruchika Agarwal*	06
3	Sustainable Development and Poor's in Indian Economy *Sher Singh*	16
4	Anxiety and Phobia in Mathematics-A Review *Dr. Dilip Kumar Guin*	23
5	Relevance of Gandhi Ideas in Globalised World *Dr. Mallikarjun I. Munch and Anand C. Nadavinamani*	28
6	"Inheritance Legislation and Women Empowerment- A Case Study in Bangalore" *Dr. Suma M Singh*	31
7	Shifting Subjectivities and The Phenomenological World of Franz Kafka's *The Trial* *Madhumanti Dasgupta*	37
8	Effect of Different Fertilizer Levels on Growth and Yield of Little Millet (*Panicum Sumantrense*) Genotypes *M. V. Bhomte, V. A. Apotikar and D. S. Pachpole*	43
9	Globalization Impact on Urbanization: A Case of Predominantly Rural-Agrarian System of West Bengal (India) *Md. Julfikar Ali and Subrata Roy*	46
10	Comparison between Sports Person Group and Non-Sportsperson Group of Modern College in Selected Factors of Physical Fitness *Prof. VikramPhale and Prof. Pritam R. Oubal*	55
11	Naga-Mandala: A Thematic Study *Dr. V Madhav*	58
12	Cultural Intelligence, Conflict Resolution Ability and Secondary School Students *Dr. Arun Kumar and Ajay Kumar*	63
13	Tactility as a Spatial Dimension of Love in Pablo Neruda's Love Poems *Madhumanti Dasgupta*	71
14	Effect of Different Treatments on Growing Degree Days in Potato *V. A. Apotikar and A. V. Solanke*	77
15	Critical Analysis of Earning Profit or Suffering Loss of NACC Societies in Solapur District *Dr. B. S. Salunkhe*	82
16	Theme, Technique and Historicism in Amitav Ghosh's *The Shadow Lines*: A Critical Study *Alok Kumar Singh*	86
17	Resonating Protest in John Agard's Poem "Listen Mr Oxford don" *Dr. Deepak Nanaware*	92
18	Portrayal of Padmini in Girish Karnad's Hayavadana *Dr. Ruchi Malaviya*	95
19	Students' Organizations in India: with Special Reference to A.P. - A Study *Dr. C. Rama Mohan Reddy*	99
20	Dalit Feminism- A Metamorphosis of Rejection into Resistance *Dr. T. Sasikanth Reddy*	102

21	Moving Tribute to The Power of Blackness in Bernard Dadie's Poem 'I Give You Thanks My God' *Dr. Kolekar Tanaji Narayan*	106
22	Gender Performative Act in Working Women's Hostel: A Sociological Study in Mumbai *Ms. Mittal Chauhan*	109
23	Struggling Woman in The Short Story of Sane Guruji and Rabindranath Tagore *Mr. Rajiv N. Alurkar*	113
24	Effect of Different Treatments on Growth Functions Like Relative Growth Rate and Net Assimilation Rate *V. A. Apotikar, A. V. Solanke, K. J. Kadde*	119
25	महिला सक्षमीकरण व सबलीकरणात मांहला बचत गटाचे योगदान *प्रा. कल्याण सजॅराव घांडके*	124
26	महाराष्ट्राच्या ग्रामीण विकासात शेळी-मेंढी व्यवसायाचे योगदान *प्रा. श्री. खडे अरुण चांगदेव*	128

STRUGGLING WOMAN IN THE SHORT STORY OF SANE GURUJI AND RABINDRANATH TAGORE

Mr. Rajiv N. Aherkar, Assistant Professor, Department of English, Late Sow S.S. Mundhe College, Gangakhed Dist. Parbhani (M.S.)

Received: 27/08/2016 | Edited: 31/08/2016 | Accepted: 05/09/2016

Abstract: *The present paper is an attempt to compare Sane Guruji and Rabindranath Tagore's perspectives on women portrayal in their short stories. Both writers are well known men of letters. Sane Guruji is a well-known writer in Marathi literature. Rabindranath Tagore is well known writer in Bengali literature. Most of Tagore's work is translated in English and other languages. He is winner of the Nobel Prize for Literature in 1913. Short stories of these two writers are the representatives of common people. Through their short stories, they present the struggle of women for their identity and space in the family as well as in the society. Their short stories present the traditional woman as well as courageous woman who struggle for her identity. They present the image of woman who struggles for her identity and space in male dominated society.The present paper investigates the struggling woman for identity and space through intelligent, emancipated, self-respecting, independent woman characters in the short story, 'Baby Saroja (BebiSaroja)' of Sane Guruji and 'Punishment' of Rabindranath Tagore. The woman characters presented in these short stories are struggling women who overcome from male domination and challenge the traditional image of woman as well as evil social system.*

Key words: *Struggling Woman, Male Domination, Tradition, Modernity, empowerment of woman.*

Introduction:

Indian social system is dominated by patriarchy as well as old tradition. In this social system woman is not given freedom. She has been victimized by various social evils. She has to live her life under the control of a man who may be her father, brother, husband or son. Woman education starts with the great efforts of social activists like Mahatma JyotibaPhule and like others who have opened the doors of education for women. The feminists struggle for empowerment of woman. The struggle of woman for liberation from male dominated social system is reflected through the writings of contemporary writers. Writers like Sane Guruji and Rabindranath Tagore present the social evils like male domination, dowry, suppression of woman, victimization of woman, superstitions etc. through their short stories and present a struggling woman who either boldly or coldly reacts against these social evils and tries to find her identity in the family as well as in the society.

PandurangSadashiv Sane is known by pseudonym Sane Guruji who deals with every essence of the society through his short stories. He discusses many issues of social phenomenon. He has experience as a freedom fighter, writer, social activist, journalist, teacher, democratic socialist and founder of *Antar- Bharti Movement*. His experience as well as the picture of contemporary societyis reflected through his short stories. He is a versatile person. He writes in Marathi language. Besides short stories, he writes novels, poems, essays, letters, biographies and translations. It is generally perceived that the main focus of his writing is children as well as youth. The objective of his writing is to entertain and to inculcate the moral values among the readers. Sane Guruji is famous for his literary work of art, *ShyamchiAai* (Shyam's Mother) and *Bhartia Sanskruti* (Indian Culture). No doubt these books are more valuable but his other writing is also valuable. His novels, poems, letters and short stories are the best example of representation of contemporary society

as well as universality. His short stories are collected in ten parts under the title *Sane Gurujinchya God Gosti Bhag -1 to 10* (Sweet Tales of Sane Guruji Part -1 to 10)'. His short stories create pathos in the mind of readers for the victims of the social evils. His writing gives moral strength to the suppressed people to fight against the social evils and helps to live a life with dignity.

Rabindranath Tagore is one of the dominant figures in Bengali literature. He not only dominated Bengali Literature but Indian Literature also. His writing has been awarded with the Nobel Prize for Literature in 1913. He is a versatile person. Being visionary, he not only represented the contemporary life but future of the human beings through his writing. Besides other writings, his short stories are also helpful to understand his vision. He is a liberal and strong supporter of woman empowerment. His play Chitra is one of the examples where he presented a strong female character, Chitra. The female characters presented through his short stories are best examples to understand his vision about the woman. He presented traditional as well as modern woman through his short stories. He presents traditional women through short stories like, Dowry (Nirupama), *The Supreme Night*(Surbala), *Vision*Kumo) etc and Modern women through short stories like, the Elder Sister(Sasikala), Laboratory (Sahini), Devotee (Devotee) etc. Through his short stories, he tried to represent the various problems of womanhood. Tagore's short story, *Punishment* is of a woman, Chandara who is being used by her husband, Sukhiram as a tool. When Chandara realizes that her husband victimized her to save his brother, she decides to accept her death than to see her husband. Chandara is a victim of male dominated society.

The story, '*Baby Sarvja*' of Sane Guruji is based on Tamil novel, '*Baby Sarvja*'. It is a story of Prema, a girl who struggles for her identity. **Sane Guruji presents her as a new woman.** She is a girl of modern ideas. Her father gives her freedom besides tradition. But she marries a man who is not an able husband. At her in laws house she is humiliated, tortured and treated like a subhuman. Even in such condition **she struggles for her existence and creates her own identity.** She has a girl child named, Saroja (Baby Saroja). At the ending of the story her husband becomes a changed man and takes part in freedom struggle with his wife, Prema and Prema accepts her.

There is an orthodox village where Ramrao, his wife, Sagunabai and his only daughter, Prema live in a mansion house. He loves his daughter. He has sympathy for the poor. Prema from her early childhood is a bold girl. She believes in secularism. Once she asks her father,

> 'Father, our hall is empty and there is no school for schedule caste boys. Our hall is always empty and what happens if we open school for schedule caste boys.'
>
> Her father replies,' Prema, people will boycott our family.'(*Baby Saroja*-P07) (Translated mine)

She wants her house should be used as a school for the schedule caste children. Her father replies her if they open a school in their house for schedule caste children, the orthodox villagers will boycott them. She gives reference of Vivekanand's view about religion. Her father is impressed by her knowledge.Prema is an ambitious girl. Once she is asked by her father about her marriage. She reminds her father the words of MotilalNeharu. She says,

> 'For marriage I am little girl' she continues,
> 'But Motilal Nehru said, (girls should marry)
> at the age of twenty. '(Baby Saroja-p7)
> (Translated mine)

She is not happy in marrying like most other girls marry in their teenage. She wants to live to fulfill her ambition. She expresses her views about marriage very boldly. Generally other Indian girls do not express their views about their marriage or the parents do not ask their daughter about marriage. The parents' decision is the decision of the daughter in Indian tradition. Prema is not like other Indian girl. She is presented as a new woman. Ramrao is also not like traditional Indian father. He is a reformer and has modern ideas. He loves his

ughter like a son. Prema believes in modernity. She es not like division in society on the basis of caste. en a Brahmin rejects to offer sacred *oja*organized by a schedule caste family, she is ready read the sacred story. As she says,

'Then father will perform the roll of a *Bhatji* (Brahmin). He will offer *Pooja* (worship) and I (Prema) will read sacred story.' (*Baby Saroja*-p11) (Translated mine)

The orthodox villagers boycott Ramrao and family because of the decision that Ramrao rforms the sacred offering in his own mansion house organized by a schedule caste boy Yeshya. mrao does not care the orthodox villagers. The thodox villagers decide to take revenge. Whenever mrao goes with the proposal of Prema's marriage, orthodox villagers create the disturbances. mrao decides to leave the village because the odox villagers like Shanbhunana and Tatya make r lives worst to live in that village. Ramrao sells property and comes to Mumabai. He arranges na's marriage with the son of Sadanandpant, Amaldar inNagpur. Sadanandpant demands five usand rupees as a dowry. Ramrao accepts the posal and prema's marriage is planned after rriage Prema is not happy at her mother-in-laws se. Her husband, Shridhar is a luxurious man spends money to fulfill his desires. He has a loved. He takes all marital ornaments of Preman gives to the lady. His marriage is a way to hide llegality and to maintain their family position in ociety.

The bold as well as liberal Prema tries to e with the oddities in mother- in-law's house. She an unlucky woman. She knows well about her and. She tries to convince him but he ignores . He starts drinking wine and beats her. Prema is ne because of traditional bondage. Her husband all her ornaments. She, like an Indian wife, s him the ornaments. Shridhar is not satisfied. eeds more money to fulfill his desire. He forces a to bring money from her fathers. He demands r as,

'Go to your parents and bring something (money or gifts). You are the only child of your father. Your father should have a big estate. Go to your parents. Bring a new ornament. If you come back empty handed, you will be kicked out. Understand?' (*Baby Saroja*-p19) (Translated mine)

Prema tells her that her father has left nothing to give her. Whatever he has, he has given it to her. He sells his land for the dowry and the marriage. Mother-in-law humiliates her. Even the servant in the house does not respect her. Her condition in the house is helpless and her position is useless. One day she sleeps in day time because she has headache. Her husband comes there and finding her wife sleeping he scolds her. Like a traditional Indian wife, Prema bears all the ill treatment given by her in laws house. They treat her as a subhuman. But her inner new woman forces her to revolt. When her husband beats her and sends her back to her father, she remembers her ambition she has before her marriage to be doctor and serve the people and feels sorry for her present condition. When she comes to her father, she lives a few days with her parents. Her mother consoles her and Premareturns back to her in laws house. Shridhar lives happily with her for a few days. She becomes pregnant. Shridhar starts humiliating Prema when his ladycomes back. As it happens in Indian tradition, her mother-in-law forces her to go her parents for delivery and bring some good ornaments for the child. It is a satire on tradition by the writer. She goes to her father for delivery and she has a baby girl, named Baby Saroja. Her parents give her last gift and request her not to come for gifts because they has left nothing to give her.

Sagunabai, mother of Prema dies. The mansion house of Ramrao is seized. Ramrao disappears. Shridhar forces Prema with her daughter out of his house. Prema has no way where to go. At last she decides to go to her parents. She is shocked to know that her mother is died and her father is disappeared. She is helped by the schedule caste

Vitthu. Prema finds herself in helpless position. She has no home of neither her husband nor of her parents. But the new woman in Prema encourages her to struggle and creates her own identity. She with her little daughter comes to Mumbai. By the sea shore she finds a man meditating. She approaches him and finds her father meditating with closed eyes. She places her daughter near him and unknowingly leaves the place. Unlike a traditional woman who ends herselfas well as her daughter's life but like a modern mother she finds her daughter in secure hands and sets for her identity. She lives in an orphanage. Ramrao takes care of the little Baby Saroja.

Like a struggling woman Prema starts to learn English. She wants to be a nurse. She comes to Poona in *Sewasadan* for nursing course. Shewasadan is an Institute run by RamabaiRanade. In her childhood Prema reads Ramabai's book, '*Amachya Ayushatil Athavani*'. She comes first in her nursing course and gets job in a renowned hospital. She walks early in the morning by the sea shore with hope that her father and her daughter will meet her. But she does not find them. She serves the patients humanly. While working in the hospital she meets her rich aunt. Her aunt, before she dies, transfers all her property in the name of Prema. One day Baby Saroja with some garlands comes to the place where Prema lives. They meet and Prema forces her to live with Prema. But Baby Saroja runs away. She is confused to give a press notice of transfer of property in the name of Baby Saroja and after reading the news her father will return and her daughter will live happily but afraid of her husband.

Prema comes to know thather husband is jailed for malpractice. She thinks,

'Shridhar ! What is my relation with him now? Is there any relation with a man who treats me like an animal? Who does not respect me, why should I express sympathy forhim? Besides Shridhar is father of Saroja. He gives me the happiness of Saroja. Shridhar should be saved. He has relation with me. It's my duty to help him in his need. (*Baby Saroja* -p50) (Translated mine)

Prema is a modern woman with human heart which compels her to help her husband. She believes in the principle that 'hates the sin not the sinner'. Her human act effects on her husband. He is changed man and like her wife takes part in freedom struggle. He is jailed. She visits him in the jail. Prema also takes part in freedom struggle. She is also jailed.Ramrao is inspired by Mahatma Gandhi's 'HarijanDaura'. He composes songs for the Harijan Movement. Saroja sings them with her melodious voice. Ramrao reads the new which is published by Prema regarding the transfer of property in the name of Baby Saroja. Ramrao and Baby Saroja meet Prema in the jail. After released from jail, Prema and Shridhar all the family comes to Shivtar, the village of Ramrao. They find that the orthodox village is changed and the Harijans are respected because of Harijan *Movement*. Prema decides to open a hospital in the mansion house of Ramrao.

Thus Sane Guruji presents a woman, Prema who struggles for her identity and proved that a woman can be the change even in the orthodox society. In comparison with Sane Guruji's *Baby Saroja*, Rabindranath Tagore's short story, *The Punishment* deals with Chandra who is the wife of ChidhamRuhey. She is deceived by her shrewd husband and consequently she has been hanged. Chandra is the central female character in this story. Dhukhiram and Chidhamare two brothers live together though their wives are fighting whenever they get chance to blame each other. One day Dhukhiram and Chidhamgo to Zaminder's court repair the roof from where water is coming inside. They do not like to work for Zaminder because he does not offer justified wage and they have to listen too much comments. Anyhow they complete their work and reach home. They find both the wives aresitting quietly. Dhukhiram asks for food. Radha, in anger shouts loudly, 'Where is the rice to offer? Did you bring rice to cook or am I supposed to earn it myself? With very angry mood, Dhukhiram attacks

with the reaping hook. She falls down and ly dies. Chandra cries,Chidham coversRadha's hukhiramthrows the reaping hook and seat on or covering his face with both hands.

Around that time Ramlochan comesto see iram and happens to see Dhukhi is crying. chan asks further clarification on his crying; am says that Chandra has attacked Radha with aping hook and Radha is died. Chidham asks he should do to save his wife. Ramlochanis a minister of the village on legal matters. He Chidham you go to police station and tell them Dhukhiram killed her wife in anger when she ot serve him food. This way you can save your Chidham's throat has dried up. He says, "I get a wife again but not brother if d.",Chidhamdoes not think about his wife even comes ready to blame his wife. The news s in a village that Chandra has stabbed Radha eaping hook. Chidham puts pressure on his to accept the crime and adds that he would save ut Chidhamis very shrewd person he loves his r more than his wife and he wants to save his er. Chandra is standstill when her husband asks accept the crime. Even Chidham consoles her o need to worry he would convey to the police magistrate as well. However, Chandra does not listen a single word but is standstill.

Tagore exposes the problems of ntional womanthrough character of Chandra ives under supremacy of male. In patriarchal ety, woman is anticipated only to do home duties llows instructions of men. Emotions and love e is not very significant for husband in this rop Chandra accepted her crime in front of y Magistrate. It seems that Chandra knows the ng nature of her husband therefore she has d looking in the opposite side when Chidham in the court. Though Judge says to look towards the eye witness and tell what relation does she has with him. She replays as:

> Covering her face with both her hands, Chandra said, "He is my husband."
>
> "Doesn't he love you?
>
> "God knows"
>
> "Do you love him?"
>
> "Yeah!"(*The Punishment*-P51)

Chandra clearly clarifies that she is not loved by her husband. Therefore it seems that she wants to get free from the control of her monstrous husband. After a long discussion, Judge concludes that Chidam and Dhukhiram have claimed the crime only to save Chandra from the punishment of 'to be hanged'. Chandra has never changed her statement. On the day of punishment a sympathetic civil surgeon asks Chandra whether she wants to meet anyone. She replays that she wants to meet her mother. At last doctor says that her husband wants to see her. But Chandra replays, "Let him die." (*The Punishment*-P52)

Thus both the writers present the women characters who struggle for their identity and space in the male dominated society. Prema's husband and Chandra's husband use them for their own sake. When Prema realizes that she has no place in her husband's house, she prefers to leave the house and to find her own identity. But Chandra, not like Prema, prefers to sacrifice herself. She desires to see her mother rather than her husband. Sane Guruji's woman character, Prema forgives her husband but Tagore's woman character, Chandra does not forgive her husband. Sane Guruji through the character of Prema tries to present a kind hearted woman who forgives her husband besides his fault but Tagore presents a strong woman through the character of Chandra who did not forgive her husband for his inhuman act.

References:

1. BiradarVasant, (1999), 'Adhunik Marathi VangmayachaItihas From 1818 to 1999 A.D.', Kailash Publication, Aurangabad.
2. DekhaneRamchandra, (2011), 'Jivan Yogi Sane Guruji' PadmgandhaPrakashan, Pune.
3. Kamat Ashok (1999), 'Matruhadayi Sane Guruji', VidhyabharatiPrakashan, Latur.
4. Matrix S.(Translated), Innovative Stories of Rabindranath Tagore, NaiSadi Book House, Delhi, 2013, P.93-94
5. Mohit K. Ray, *Studies on Rabindranath Tagore*,vol-II, Atlantic Publishers and distributors, New Delhi, 2004, P.225
6. NemadeBhalchandra (Ed.), (2014), 'Sane Guruji Punarmullyankan', SahityaAkademi, New Delhi.
7. Rajyadhyaksha M.V. (1957), 'Fiction Today in Marathi' AkashvaniSahityaSamaroh, Government of India Press Information Bureau, Mumbai.
8. Ray, M.K., *Selected Essays Rabindranath Tagore*, Atlantic Publishers and Distributors, New Delhi, 2012,P.178
9. Sane Guruji (2012), Sane Gurujinchya God Gosti Bhag-1 te 10 KeshavBhikaji Dhavale, Mumbai.
10. Tagore Rabindranath, *Rabindra Rachanbali*, Birth Centenary Edition. Vol-7,Calcutta, Govt. of West Bengal, 1961,P.986-987
11. Varada Publication (2011), 'Sampurn Sane Guiruji Volume 44, Sane Guruji Vishayi', Varada Publication, Pune.

ISSN 2319-8648

Current Global Reviewer

International Research Journal Registered & Recognized Higher Education For All Subjects & All Languages

Principal
Late.Sow.Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist.Parbhani

Editor In Chief

Arjun B. Godam

CURRENT GLOBAL REVIEWER ISSN - 2319- 8648
Half yearly Research Journal 4 Vol 1 Issue VIII, May. 2016 to Oct . 2016

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author	Page No.
1	Comparative Income Statement of Maharashtra State Agricultural Marketing Board	Dr. Awade N. H. Prof.Kawade V.P	5-7
2	'Sustainable Economic Development – A scenario to enhance environmental issues in Indian perspective'	Dr. S. L. Soni	8-10
3	A Study On Shri Kshetra Siddhagiri Math: A Role Model	Prakash T.Waghmare Tushar T. Waghmare	11-15
4	Recommendations Of The mandal Commission for the Other Backward Classes: A Sociological Study	Shri. Bansode S. S.	16-22
5	Issues and Problems : Dalit Literature	Shinde Sachin	23-25
6	Politics of PWP in Maharashtra	Dr. Sanjivan M. Kadam	26-30
7	महात्मा गांधीजीचे सत्याग्रहासंबंधीचे विचार - एक आढावा	डॉ.सौ.पिनाटे किरण प्रल्हादराव	31-34
8	"प्रेमचन्द की कहानियों में व्यक्त विभिन्न समस्या"	प्राचार्य डॉ. गणपत श्रीपतराव माने	35-40
9	मानवाधिकार संरक्षण के क्षेत्र में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका	माधव शिंदे	41-45
10	शाश्वत विकासाकरीता ग्रामीण महिला सशक्तता साखळी	प्रा.सुरवसे ए.पी.	46-49
11	ग्रामीण विकासात ग्रामसभेची भूमिका	प्रा.राठोड एस.के.	50-56
12	श्री. दत्त र. कवठेकर : एक अभ्यास	बिलुरे श्रीदेवी रामचंद्र	57-60
13	महाराष्ट्रातील वाढत्या लोकसंख्येच्या वैशिष्ट्यांचा तुलनात्मक अभ्यास : विशेष संदर्भ 2001 ते 2011	प्रा. ज. के. ससाणे	61-70-
14	स्वयंसहाय्यता बचत गट	डॉ. इ.जे. हेळगे	71-79

Principal
Late.Sow.Kamalabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist.Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half yearly Research Journal
31
ISSN - 2319- 8648
Vol 1 Issue VIII, May. 2016 to Oct. 2016

महात्मा गांधीजीचे सत्याग्रहासंबंधीचे विचार - एक आढावा

डॉ.सौ.पिनाटे किरण प्रल्हादराव
लोकप्रशासन विभाग,
कै.सौ.शोषाबाई सिताराम मुंढे
कला महाविद्यालय,गंगाखेड

7

Research Paper - Public Adm.

प्रस्तावना :-

सत्यागृहाची कल्पना ही गांधीजींनी या देशाला दिलेली महत्वपुर्ण अशी एक राजकीय देणगी आहे. त्यांच्या सत्याग्रह विचाराला अनन्य साधारण असे महत्व प्राप्त झाले आहे. गांधीजीच्या मते सत्याग्रह हा प्रत्यक्ष कृतीचा सर्वांत प्रभावी मार्ग आहे. इतर सर्व मार्ग संपल्यावर या मार्गाचा अवलंब करावा. सत्यागृह या शब्दाचा अर्थ सत्याला चिटकून राहणे होय. सत्यागृहात कोणत्याही प्रकारच्या हिंसेला वाव नसतो. यात प्रतिपक्षावर हिंसेचा प्रयोग करता येत नाही. या उलट प्रतिपक्षाचे मन अंत:करण बदलण्यावर भर द्यावा लागतो, आपल्या संपूर्ण जीवनाची जडण घडण सत्याग्रही निष्ठेवर उभारणे आवश्यक आहे. त्यासाठी वाटेल तेवढी संकटे आली तरी त्याला आपण सत्य समजतो त्यावर टिकून राहणे हा आहे सत्याग्रह.

सत्याग्रहाचे स्वरूप :-

सत्याग्रह हे एक असे नाणे आहे. की ज्याच्या एका बाजूला प्रेम व दुसऱ्या बाजूला सत्य ही अक्षरे कोरलेली आहेत. तसेच सत्याग्रहात मुख्य गोष्ट असते ती "समोरच्या माणसाच्या विचार-परिवर्तनाची स्वत: शुध्द विचार करायचा व समोरच्या माणसाला समजावून सांगून त्याच्या विचारात तो उतरवायचा त्याच्याशी विचार विनियम करतांना आपल्या विचारात काही दोष दिसला तर त्यांचा शोध घ्यायचा हे खऱ्या सत्याग्रहाचे स्वरूप आहे.

सत्याग्रहाची साधने :-

राजकीय क्षेत्रात सतत होणारे अन्याय, जूलूम व शोषण याविरूध्द लढा देण्यासाठी सत्याग्रह हे प्रभावी साधन आहे. असे गांधीजी म्हणत. सत्याग्रहासाठी विविध मार्गाचा अवलंब करवा लागतो. ते मार्ग पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. सविनय कायदेभंग :-

सविनय कायदेभंग हा आपला जन्मसिध्द अधिकार आहे. गांधीजीच्या मते, सविनय कायदेभंग हे एक वैध आंदोलनाचे शुध्द स्वरूप होय. त्यामुळे समाजहिताची हानी होणार नाही.

सविनय कायदे भंगाची चळवळ गांधीजींनी १९३०-३१ मध्ये सुरू केली. त्यावेळी त्यांनी असा स्पष्ट इशारा दिला की जर कार्यकर्ते जनतेच्या इच्छेचे प्रतिनिधीत्व करत नसतील आणि अत्याचारी दृष्टी व्यक्तीला सहाय्य करत असतील तर अशा राज्याचे कायदे जनतेने पाळू नयेत. अर्थात असे करतांना आपल्यावर राज्यकर्त्यांकडून जे अत्याचार होतील ते सहन करण्याची व्यक्तीची तयारी असली पाहिजे. सविनय कायदेभंग अहिंसात्मक मार्गाने व्हावा असे गांधीजी म्हणत.

२. असहकार :-

१९२०-२१ मध्ये गांधीजींनी असयोग चळवळ सुरू केली. कारण एकंतर ब्रिटीशांच्या अत्याचारांशी भारतीय जनता भरडून निघाली होती. त्यांच्या मते अत्याचार व शोषण म्हणजे शोषितांच्या इच्छित किंवा अनिच्छित सहकार्याचा परिणाम आहे. जनता सहकार्य करते म्हणून शोषण सुरू राहते.तेव्हा जनतेने असहकारातून अन्यायी व अत्याचारी सरकारला संपुष्टात आणले पाहिजे.

३. उपोषण :-

सत्याग्रहासाठी उपोषणाचा मार्ग उत्तम आहे. असे गांधीजी म्हणत. गांधीजींचा २१ दिवसांचा उपवास जगप्रसिध्द आहे. उपोषण हे सत्याग्रहातील अत्यंत प्रभावशाली शस्त्र आहे. ईश्वरावर अनन्य भक्ती असली व त्याची अंतस्थ प्रेरणा असली तरच हा मार्ग वापरावा उपोषण स्वार्थासाठी होवू नये कारण त्यापासून यशप्राप्ती होत नाही. उपोषणामुळे उपोषण करणाऱ्याला जरी कष्ट होत असले तरी त्यामुळे कठोर ऱ्हदयाच्या विरोधकाचेही ऱ्हदयपरिवर्तन घडून येते.गांधीजींनी जे उपोषण केले होते ते भारताला स्वातंत्र्य मिळावे म्हणून.

४. हरताळ :-

समाजवादी तत्वज्ञानापेक्षा गांधीजीची हरताळाची कल्पना वेगळी आहे. हरताळ ऐच्छिक असावा. अंतर्गत विरोधामुळे सत्याग्रही काम बंद करतात. हरताळाची भूमिका सर्वांना समजायला हवी. हरताळ कर्त्यांनी केवळ हरताळ तंत्रावर अवलंबून राहू नये. त्यांनी वारंवार याच मार्गाचा वापर करू नये. हरताळामुळे विरोधकांचे हृदय परिवर्तन होऊ शकते.

५. बहिष्कार :-

बहिष्कार हे सुध्दा सत्याग्रहाचे उत्तम साधन होय. गांधीजींच्या आज्ञेनुसार भारतीय जनतेने परदेशी मालावर पूर्णपणे बहिष्कार टाकला होता. एवढेच नव्हे तर सरकारी कचे-या, न्यायालये, शाळा यावरही बहिष्कार टाकण्यात आला होता. बहिष्कार हा राजकीय क्षेत्राबरोबरच सामाजिक क्षेत्रातही उपयुक्त ठरतो एखाद्या व्यक्तीवर बहिष्कार टाकल्यास तो चांगल्या मार्गाचा अवलंब करते. अर्थात बहिष्कारामुळे व्यक्तीवर अपमानकारक स्थिती येणार नाही. याची मात्र काळजी घ्यावी.

६. देशत्याग :-

जेव्हा एखाद्या प्रदेशात जीवन जगणे अशक्य झाले असेल, सतत मानभंग होत असेल अहिंसामार्गाने प्रतिकार करणे अशक्य असेल आणि हिंसात्मक मार्गाचा अवलंब करून स्वत:चे संरक्षण करणे शक्य नसेल अशा वेळी व्यक्तीने तो प्रदेश सोडावा. गांधीजींनी प्रदेश सोडण्याचा सला १९२८ आणि १९३९ मध्ये अनुक्रमे बारडोली, जूनागढ, विठ्ठलगढ आणि लिंबाडी येथील जनतेला दिला होता .

अशा प्रकारे सत्याग्रहाची भूमिका करणा-या व्यक्तींनी शुध्द आचरण ठेवावे आणि त्याचप्रमाणे आदराची भावना ठेवण्याचाही प्रयत्न त्याने केला पाहिजे. निर्भयपणे सत्याग्रहाने कार्य करावे आणि सत्याग्रहाची स्वत:च्या कार्यपध्दतीबाबत श्रध्दा असावी लागते.

सत्याग्रहाचे खरे शिक्षण लोकांना द्यावे लागेल कारण येथे खरीखुरी लोकशाही जिवंत ठेवायची आहे. सरकार किंवा जनता जर दहशतवादाचा अवलंब करीत असेल तर ही लोकशाही टिकणार नाही. तिच्या रक्षणासाठी ज्यांच्यात ओतप्रोत देशप्रेम आहे व ज्यांची शिकण्याची इच्छा आहे. अशा हजारो लाखो लोकांना सत्याग्रहाचे शिक्षण द्यावे लागेल. असे गांधीजी म्हणत.

संदर्भ सूची

१. प्रशासनिक विचारक - श्रीराम माहेश्वरी मैकमिलन इंडिया लिमिटेड.

२. गांधी विचार - यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापिठ नाशिक. (OPN-०७४)

३. गांधी - जसे पाहिजे जाणले विनोबांनी -संपादन - कांतिशाह परंधाम प्रकाशन,पवनार.

४. एकला चलोरे - (OPN-०७२) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापिठ,नाशिक.

Peer Reviewed International Research Journal

VIDYAWARTA

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

40) [illegible]
डॉ. [illegible], मुंबई || [illegible]

41) भारतीय [illegible] आंदोलन में [illegible] का महत्त्व
डॉ. [illegible], [illegible] (छत्तीसगढ़) || [illegible]

42) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में [illegible]: एक राजनैतिक चिंतन
डॉ. [illegible], झाँसी || 158

43) मुस्लिम महिलाओं का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय
डॉ० संजय कुमार सिंह, वाराणसी || 160

44) पाठ निर्धारण की समस्याएं : कारण और निवारण
डॉ० राजेश कुमार सिंह, मथुरा || 166

45) गजानन माधव मुक्तिबोध और उनका क्रांतिकारी व्यक्तित्व
डॉ. पंकज कुमार सिन्हा || 170

46) राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत: स्वामी विवेकानंद
डा. रेणु सिंह कुशवाह, भिण्ड (म.प्र.) || 172

47) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना
डॉ. विठ्ठल केशवराव टेकाले, जि. परभणी || 175

48) हिंदी कथा साहित्य के विकास में मंजुल भगत का योगदान
प्रा. मैना रामदास जगताप, सातारा || 179

49) विश्वास पाटील कृत चंद्रमुखी : आज की मूल्यहीन राजनीति
डॉ.सांकरे बालाजी काशीनाथ, औरंगाबाद || 183

50) समसामयिक संदर्भों में उत्तरकाशी हस्तशिल्प सौंदर्य सम्पदा
कु. गंगोत्री, डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला (राजस्थान) || 185

Vidyawarta™

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

47

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले
हिन्दी विभाग,
एस. एस. एम. कॉलेज ऑफ आर्टस् गंगाखेड,
जि. परभणी

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में रामदरश मिश्र का योगदान विशिष्ट है। उनके लिखे गए ग्यारह उपन्यास हिन्दी साहित्य की अनुपम और श्रेष्ठ उपलब्धि है ।

मनुष्य विचारशिल प्राणी है। मनुष्य जन्म से ही अनुकरणप्रिय है। जैसे–जैसे मनुष्य बडा होता है, वैसे–वैसे उसकी कार्य–प्रणाली बदल जाती है। इसी कार्य–प्रणाली से उसकी पहचान भी होती है।

मिश्र जी की सारी रचनाएँ घटित–घटनाओं के आधार पर निर्माण हुई है। इनकी रचनाओं की सारी घटनायें ग्रामीण वातावरण की है। उनका लिखा हुआ समाज के अनुभव जगत् से सीधा जूडा हुआ है। ग्रामीण जीवन से उनका संबंध बचपन से है, उसको उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रण किया है। उनकी साहित्य कृतियों में कल्पना और कृत्रिमता न के बराबर है।

मिश्र जी गाँव से ही बने हैं, उन्हें गाँव ने ही निर्माण किया है। इसलिए मिश्र जी ने भारतीय ग्रामीण परिवेश को अपनी कृतियों में स्थान दिया है।

मिश्र जी ने काव्य, उपन्यास, कहानी, ललित निबंध, यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा, आलोचना आदि सभी क्षेत्रों में मुशाफिरी की है। वे रचनाकार पहले हैं इसके बाद प्रोफेसर या और कुछ ।

मिश्र जी के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन (ग्रामीण चेतना)

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण जीवन पर लिखने वाले उपन्यासकारों में रामदरश मिश्र जी का नाम सर्वोपरी है। ग्रामीण जीवन का सक्षम और यथार्थ चित्रण करने वाले साहित्यकारों में वे अग्रणी हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से पता लग जाता है कि उन्होंने जो अनुभव किया है, जो जिया है, जो देखा है उनके आधार पर ग्रामीण जीवन को उन्होंने अत्यंत कलात्मक ढंग से अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। कविता, कहानी, उपन्यास में उनके अपने अनुभव जिन्हें उन्होंने अपने आस–पास के परिवेश में देखा है। उपन्यासों के माध्यम से मिश्र जी ने गाँव का सजीव चित्रण अंकित किया है। मिश्र जी ने अपने अनुभवों को अपने उपन्यासों में डाल दिया है। जिससे उनके सभी उपन्यास जीवंत हो उठते हैं मिश्र जी के पैर हमेशा जमीन पर ही टिके रहे। गाँव का वह जीवन जिससे रसकण खींचकर उनमें का रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति का आवश्यक उपकरण जुटाता रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में रामदरश मिश्र का अपना खास योगदान रहा है। उनके द्वारा लिखे गये ग्यारह हिन्दी उपन्यास हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ एवं अनुपम उपलब्धि है। पानी के प्राचीर, जल टुटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, बीस बरस, थकी हुई सुबह इन पाँच उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश का सही चित्रण हुआ है।

अपने लोग, बीच का समय (आदिमय राग), रात का सफर, आकाश की छत, बिना दरवाजे का मकान, दूसरा घर इन छः उपन्यासों का सीधा संबंध ग्रामीण जीवन से नहीं है। फिर भी इन उपन्यासों के प्रमुख पात्र सोच तथा अनुभव के धरातल पर गहरे या हल्के रुप में अपने–अपने गाँव से जुड जाते हैं। इन पात्रों में अपने गाँव की धरती से कट जाने का दुःख, पीडा बार–बार उभरकर आती है। अपना गाँव इन पात्रों की स्मृतियों में बार–बार उभरकर सामने आता रहता है।

जल टुटता हुआ, सुखता हुआ तालाब, पानी के प्राचीर इन तीन उपन्यासों की कथा–भूमि गोरखपूर जिले का वह आंचलिक हिस्सा है, जो गोर्रा और राप्ति नदी की धारा से घिरा हुआ है। इन नदियों के बाढ के कारण आवाजाही की असुविधा भी होती है। अन्य

प्रकृत्ति की विपत्तियों, राजनीतिक उपेक्षाओं एवं आर्थिक विपन्नताओं के कारण अशिक्षा, अंधविश्वास तथा आर्थिक शोषण, राजनीतिक शोषण का शिकार बना हुआ है, गोरखपूर जिले का यह हिस्सा।

पानी के प्राचीर इस उपन्यास का पांडेपूरवा गाँव और जल टूटता हुआ इस उपन्यास का तिवारीपूर गाँव इन दोनों गाँवों के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक वातावरण में अधिक अंतर नहीं है। पानी के प्राचीर का पांडेपूरवा गाँव प्रमुख रुप से ब्राम्हणों का गाँव है। इस गाँव में मुखिया राज है। यह गाँव दो भागों में विभाजित किया गया है — दक्खिण टोला और उत्तर टोला। असली बात यह है कि यह विभाजन या बँटवारा स्वार्थ और मजबूरी के हिसाब से हुआ है। इसलिए इस गाँव पर मुखिया का वर्चस्व है। पांडेपुरवा के नवरात्रि, मेला, ओझा, सोखा, भूत, चुडैल, डायन आदि का इतना सजीव चित्रण हुआ है कि ऐसे लगता है उपन्यासकार का हाथ पकडकर पाठक ऐसे अंचल क्षेत्र में जा पहुँचता है जहाँ अंधविश्वास और रुढियाँ आज भी मौजुद है। सूखा पडने पर बारिश बरसाने के लिए अर्थात् वरुण देव को प्रसन्न करने के लिए स्त्रियों का विशिष्ट नृत्य, गीत, बच्चों का लोगों के दरवाज पर नंगा लेटना और विवाह जैसे अवसर पर गाए जानेवाले गीत ने मिलकर मिश्र जी के कथानक को एक विशेषता प्रदान की है।

जल टूटता हुआ यह मिश्र जी का दूसरा उपन्यास है। जल टूटता हुआ इस उपन्यास में आजादी के बाद बदले हुए गाँव का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु टूटन कहानी से ली हैं। इस कहानी की तरह ही उपन्यास में भी घर, परिवार, गाँव समाज टूटने लगता है ।

सुखता हुआ तालाब इस उपन्यास में सुखता हुआ रानी तालाब संकेत कर रहा है, उस तरफ जहाँ व्यक्ति—व्यक्ति में जो प्रेम था, जो भाईचारा था वह सूखते हुए तालाब की तरह प्रेम भी कम होता जा रहा है। सूखते हुए तालाब का पानी जिस तरह गंदा होता जाता है। इसी प्रकार गाँव के व्यक्तियों के हृदय भी कलुषित होते जा रहे हैं। सूखता हुआ तालाब बदलते हुए ग्रामीण परिवेश का बहुत ही अच्छा प्रतीक है। कभी गाँव में भाईचारा, आत्मियता थी, नैतिक आचरणों की निर्मलता भी थी आज क्रुरता, टुच्चापन, स्वार्थपरता, जटिलता, संघर्ष, अनैतिक संबंध, पीछडेपन का प्रतीक बन जाता है। यहाँ गाँव के भविष्य की चिंता मुख्य है। इस उपन्यास में गाँव को तोडनेवाली ताकत और भी मजबूत होती नजर आती है। इसलिए मूल्यों में विश्वास रखने वाले भले आदमी देव प्रकाश उपन्यास के अंत में गाँव छोडकर निकलते नजर आते है।

अपने लोग इस उपन्यास में उपन्यासकार मिश्र जी प्रोफेसर प्रमोद और स्वयं के माध्यम से गोरखपूर का स्थानीय भूगोल प्रस्तुत करते है। उपन्यास का प्रमुख पात्र प्रोफेसर प्रमोद दिल्ली में बीस बरस की सुविधा भरी जिन्दगी भोगता है। गांव का लगाव उसे लगातारअपनी ओर खींचता है। इसी कारण वह दिल्ली में अपने आप में अजनबीपण महसूस करता है।गाँव और नगर इन दोनों जिंदगीयों के बीच झूलता रहता है। इसी कारण वह पूरी तरह किसी एक से भी वह लगाव और आत्मीयता नहीं जुटा पाता। बाद में प्रोफेसर प्रमोद गोरखपूर आकर बस जाता हैं, अपने लोगों के बीच वह आ जाता है, फिर भी उसे सुना—सुना लगता है। वह अपने आप में खोया—खोया और अपने आप से कटा—कटा महसूस करने लगता है। उसके अपने ही लोगों ने प्रोफेसर प्रमोद की संवेदनशीलता पर अनेक चोटें की। जिस कारण वह टूट जाता है। अपने ही लोगों के अत्याचार, धूर्तता, नीचता, शोषक वृत्ति से सताया हुआ प्रोफेसर प्रमोद का व्यक्त तनाव इस उपन्यास की केंद्रीय संवेदना है। गोरखपूर में प्रोफेसर प्रमोद का घर रिश्तेदारों, गाँव के लोगों के लिए आराम करने की जगह बन जाता है। ये लोग आये दिन प्रोफेसर प्रमोद को तंग करते है। कचहरी का काम करने आए गाँव के लोग ठीक खाने के समय ही आते हैं। जेब कटने या पैसे होने का बहाना बनाते हैं और प्रोफेसर प्रमोद से पैसे ऐंठते हैं।

बीच का समय (आदिम राग) इस उपन्यास की कथावस्तु गाँव और शहर से जुडी समांतर चलती है। उत्तर प्रदेश का प्रोफेसर शील गुजरात के वातावरण और वहाँ की संस्कृति में जी रहा है। लेकिन बार—बार वह पूर्वस्मृति एवं पत्रों के माध्यम से अपने गाँव की

जिंदगी से जुडता है। इस उपन्यास की कथा गुजरात के कॉलेज और गाँवों, पहाडों में घूमती रहती है।

बीस बरस इस उपन्यास में उपन्यासकार रामदरश मिश्र जी फिर से गाँव की ओर वापिस लौटते नजर आते हैं। इस उपन्यास का नायक दामोदर बीस बरस बाद दिल्ली जैसे महानगर से अपने गाँव वापिस लौट आता है। अपने गाँव आकर दामोदर देखता है कि उसका अपना गाँव कितना बदल गया है।

रामदरश मिश्र के उपन्यासों के गाँव में पहूँचने पर ग्रामीण जीवन का चित्र पाठकों के सामने उभरकर आता है। यह ग्रामीण जीवन मौसम और महीनों के अनुसार अपने रंगों में रंगा नजर आता है। इस प्रकार रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गाँवों के प्राकृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण नजर आता है।

प्रकृति चित्रण का किसी भी साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मनुष्य हमेशा से ही उसके स्वभाव के कारण प्रकृति के उल्लसित रुप का चित्रण दिखाई देता है। पानी को प्राचीर उपन्यास के प्रारंभ में ही फागुन मास के अनुसार प्रकृति के विविध रुप और रंगों का चित्रण हुआ है। इस महीने में पूनम की रात में चाँदनी का खिलना, कोयल की कूक, खेत—खलिहान, बाग—बगीचे, टीलों—सिवानों आदि प्रकृति के उपकरणों को लेकर उपन्यास का ताना—बाना बुना गया है। प्रकृति के इन उपकरणों से वहाँ के जन—जीवन का गहरा संबंध जुडा होता है। लोगों को इस महीने की प्रकृति बहुत प्रभावित करती नजर आती है। उपन्यासकार ने मौसम और महीनों के अनुसार प्रकृति के परिवेश में जो परिवर्तन होता है उस परिवर्तन में मानव की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला गया है।

पांडेपूर गाँव की समस्त वस्तुओं को प्रकृति किस प्रकार परिवर्तन कर देती है, इसका जीवन चित्रण पानी के प्राचीर इस उपन्यास में दिखाई पडता है। बरसात होते ही किसान अपने काम में लग जाते है। खेतों में हरियाली दिखाई देती है। दिन, रात, महीने, ऋतुएँ, पुनम, अमावस्या, खेत—खलिहान, बाग—बगीचे, पशु—पक्षी, गाँव—परिवार, सडक, गलियाँ, नालियाँ, गड्ढे, तालाब, ताल, नदियाँ, पेड, पौधे, सूखा, बाढ आदि रंग बिरंगी प्रकृति केसब चित्र दृष्टिगोचर होने नजर आते है।

थकी हुई सुबह रामदरश मिश्र जी का नया उपन्यास है। इस उपन्यास में माधोपूर के परिवेश का चित्रण प्रधान है। गाँव से दो किलोमीटर दूर गौरी नदी है। गौरी नदी और गाँव के बीच एक लंबी तलेटी पडती है। वह बरसात के दिनों में ताल बन जाती है। गाँव के लडके—लडकियाँ अपने इलाके की प्रकृति से प्रभावित होते है। नदी का चौडापन, समतल पाट और बडे—बडे कगार नदी के दोनों ओर फसलों का विस्तार आदि से लक्ष्मी को माँ, पिता, सखियाँ, सहेलियाँ, गाँव के लोग, बाग—बगीचे, खेत—खलिहान एक अजीब जादू की तरह अपनी ओर खिंचते है।

जल टूटता हुआ इस उपन्यास के सतिश के पिता अमलेश प्रकृति की विकराल परिस्थिती में भी अविचल रहते है। जब बादल बहते हैं और हवा बहती है तो वे प्रकृति को उल्लासित देखते है। ऐसे में बारिश शुरु हो जाती है। अमलेश गाँव, खेत, बगीचे की अदृश्यता में डूब जाते हैं।

सूखता हुआ तालाब इस उपन्यास में शिकारपुर और नारायणपूर इन गाँवों के इलाके के प्राकृतिक परिवेश का चित्रण किया गया है। इन गाँवों के लोगों को प्रकृति अच्छी लगती है। लोगों के बदले हुए रूप को बताते हुए प्रकृति अपना रूप किस प्रकार अपरिवर्तनीय है इसका चित्रण हैं। घटाएँ, फसलें, हवाएँ, नदी, नदी का दूर तक मोड, उसके किनारे की पुरवाई हवा, उसकी भागती हुई फेनिल लहरें देखना इन ग्रामीणों को अच्छा लगता है। इसके साथ ही धाराओं का शोर, धाराओं का बेहताशा भागना, नदी तट की डालों का झुककर पानी में भीगते रहना काले—काले बादलों का घिरना इन लोगों को अच्छा लगता है।

पानी के प्राचीर जैसा प्रकृति के विकराल रूप का चित्रण जल टूटता हुआ इस उपन्यास में भी दिखाई देता है। प्रकृति के इस विकराल रूप से गाँव के लोगों का बहुत नुकसान हो जाता है। इन लोगों को रबी और खरीब फसलों पर ही तो भरोसा होता है परंतु प्रकृति के प्रकोप के कारण अच्छी फसल बरबाद हो जाती है उनकी सारी आशाएँ टूट जाती हैं। किसान प्रकृति के

तट तक बदलाव का इंतजार करता है, क्योंकि अभावों की पूर्ति के लिए प्रकृति की ही महत्त्वपूर्ण रहती है। प्रकृति जब अपना रंग दिखाने लगती है तो गोर्रा और राप्ती नदी उफान पर होती है। किसानों का सर्वनाश नजदीक आ जाता है। गाँववाले उससे बचने के लिए मिलकर उपाय खोजते हैं, बाँध में मिट्टी डालते हैं परंतु प्रकृति के आगे उनकी एक नहीं चलती। प्राकृतिक प्रकोप से गोर्रा और राप्ती नदियों के आसपास का इलाका पानी से भर जाता है। इस कारण इन लोगों की आशा निराशा में बदल जाती है।

जल टूटता हुआ इस उपन्यास में तिवारीपुर के तमाम लोग नाले पर बाँध बाँधने के लिए लग जात हैं। चारों ओर के खेतों में पानी भर गया है। यहाँ के लोग छाती भर पानी में रोजमर्रा की जिंदगी जी रहे हैं। पानी में जानवरों और आदमियों की न जाने कितनी ही लाशें बह रही है। इस बाढ में फसलें भी डूबकर समाप्त हो जाती है। नागपंचमी का त्यौहार होकर भी गाँववाले नहीं मनाते। रंग मे भंग हो जाता है। लडके–लडकियों के खेलने में उत्साह नहीं रहता। ऐसी विपन्न अवस्था में मास्टर सुग्गन अपनी लडकी की उम्र और शादी के बारे में सोच–सोंचकर चिंता में डूब जाता है। इस बारे में गाँव के लोग भी मास्टर सुग्गन को ताने मारते हैं। बाढ के कारण फसल नहीं होती, लडकी के विवाह के लिए पैसों की आवश्यकता होती है। इसलिए मास्टर सुग्गन अपनी लडकी का विवाह नहीं कर पा रहे हैं। लोगों के घरों में बाढ का पानी घुस जाता है। खाने–पीने के सब साधन पानी में डूब जाते हैं। अनेक परिवार बूढे–बच्चों के साथ जानकर बडी कठिनाई से रात जागकर काट लेते हैं। इस प्रकार प्रकृति के प्रकोप के कारण गाँव के लोगों की स्थिती भयावह हो जाती है। उपन्यासकार ने बाढ हटने के बाद की स्थिति का भयावह हो जाती है। उपन्यासकार ने बाढ हटने के बाद की स्थिती का भी चित्रण किया है। जैसे–धरती का सफेद दिखाई देना मानो वह विधवा हो गयी है। बाढ की बरबादी के कारण खेत का मौन कथा कहना, धरती का जड सन्नाटा, सन्नाटे को चीरते हुए हल और बैल, जडता की छाती में बिखेरते हुए बीज, लहलहाते अंकूर, झुमती फसलें और फसलों का कट जाने के बाद का सन्नाटा फागुन के माह में वातावरण में खुलापन आ जाता है। आमों में बौर जोर के लद जाते हैं। आधा अषाढ बीत जाने पर भी लोगों को आकाश में बादल दिखाई नहीं देते। खेतों में धूल उडती है। किसान बेचैनी से बरसात का इंतजार करते है ताकि खेत जल्दी से बो दे। सतिश को बारिश आने का संकेत नजर आता है। वह खेतों की ओर जाता है और वहाँ जाकर बादलों की ओर आशाभरी नजरों से देखता है। भारत मुख्यत: कृषि–प्रधान एवं ग्रामीण देश है। भारत में भौगोलिक, सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण भारतीय गाँव आकार, प्रकार एवं रचना की दृष्टि से एक समान नहीं है। भारतीय गाँवों की विशेषतायें निम्न हैं– भारतीय ग्रामीण सामाजिक संगठन का मुख्य आधार संयुक्त परिवार है एवं जाति–प्रथा है। ग्रामीण परिवार कृषी पर आधारित है। संयुक्त परिवार और जाति–प्रथा दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं। ग्रामीण जीवन में परिवार अपेक्षाकृत सबल एवं स्वयंपूर्ण होता है। परिवार से धर्म, व्यवसाय, जीवनक्रम, मनोरंजन, राजनीति प्रभावित होते रहे हैं।

रामदरश मिश्र के उपन्यास साहित्य में ग्रामीण जीवन वास्तविक और यथार्थ चित्रण हुआ है। परिवेश ही इनके उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु है। एक जीवंत पात्र की तरह परिवेश की उपस्थिति उपन्यास को प्राणवान और अर्थवान् बनाती है। मिश्र जी के उपन्यासों में भारतीय गाँव अपनी समस्त विशेषताओं के साथ पाठकों के सामने उपस्थित होता है। यह गाँव भारत का कोई प्रतिनिधिक गाँव हो सकता है। मिश्र जी की संपूर्ण चेतना ग्रामीण जीवन से जुडी है। मिश्र जी ने ग्रामीण जीवन की तस्वीरों के साथ–साथ शहरी वातावरण को भी आलोकित किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

पानी के प्राचीर – रामदरश मिश्र
जल टूटता हुआ – रामदरश मिश्र
सुखता हुआ तालाब– रामदरश मिश्र
बिना दरवाजे का घर – रामदरश मिश्र
अपने लोग – रामदरश मिश्र
बीच का समय – रामदरश मिश्र

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Oct. To Dec. 2017
Issue-20, Vol-14

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

28) Importance of Education and Skill Development in Economic Growth
Prof. Bhagwat Bhaurao Gadekar, Nashik || 119

29) An analytical study on turnover position of Synbiotic Company
Ajitkumar R. parmar, Vallabh vidyanagar || 125

30) Awareness, Use and Satisfaction of R. G. Shah Science College Library Users, Ahmedabad..
Dr. Gita Kirankumar Shah, Ahmedabad || 129

31) SARVA SHIKSHA ABHIYAN (SSA) AND EDUCATION DEVELOPMENT IN KARNATAKA
MAHANTESH SOGAL, Dr. D. N. PATIL, Belagavi. || 135

32) A Study on the Challenges and Prospects of Cashless Economy in India
Dr. Y. Venkateshwarlu, Madhapur || 140

33) धुळे जिल्ह्यातील महाविद्यालयीन स्तरावर अध्यापन करणाऱ्या अध्यापकांच्या वर्ग संघटन कौशल्य क्षमतेचा अभ्यास
डॉ. ईश्वर एस. पाटील, डॉ. वंदना एस. पाटील, जि. जळगांव || 146

34) भारतातील अति नागरीकरणाची कारणे व परिणामांचा भोगोलीक अभ्यास
प्रा. एल. झेड. पाटील, धुळे || 150

35) हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामातील अज्ञात चरित्र बाबासाहेब परांजपे
प्रा. डॉ. सुनील व्ही. शिंदे & प्रा. औचित्ये बी.सी., जि. परभणी || 152

36) हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गलियारों में वैश्वीकरण का प्रभाव
डॉ. अंकिता बोरा || 155

37) प्रेमचन्द के उपन्यासों मे दलित नारी का संघर्ष : दलित विमर्श
डॉ. मीता कौशिक, चण्डीगढ़ || 158

38) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन नैतिक और धार्मिक शिक्षा के प्रबल प्रवक्ता
डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार, धुले || 163

39) महोबा क्षेत्र के चंदेल कालीन जलाशय
लालसिंह, ग्वालियर || 166

40) इतिहास और जीवन गति
डॉ. मोना, हरिद्वार || 168

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal — http://www.vidyawarta.blogspot.com

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

३) ग्रामीण भागात वरील गोष्टीशिवाय ग्रामीण भागातील व्यवसाय त्यातुन उत्पादीत मालाची योग्य किंमत मिळाली तर खेडे सुजलाम सुफलाम व समृद्ध होतील. शहरांकडे होणारे स्थलांतर कमी होईल.

• संदर्भ ग्रंथ (Reference) :-

१) लोकसंख्या भूगोल - डॉ. अहिरराव, डॉ. अलीझाड, प्रा. धापटे, निराली प्रकाशन, पुणे

२) लोकसंख्या भूगोल - डॉ. व्ही. जे. पाटील, प्रा.ढाके, प्रशांत पब्लिकेशन,

३) लोकसंख्या भूगोल - डॉ. सजय भैसे, प्रा. मस्की, अथर्व पब्लिकेशन, धुळे

४) लोकसंख्या आणि समाज - डॉ. दिलीप खैरनार

५) लोकसंख्या शिक्षण - शिल्पा कुलकर्णी

६) लोकसंख्या आणि समाज - प्रा. सौ. लिला शिंदे, प्रा. सौ. लता चौधरी, श्री विद्या प्रकाशन, पुणे

❑❑❑

35

हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामातील अज्ञात चरित्र बाबासाहेब परांजपे

प्रा. डॉ. सुनील व्ही. शिंदे
सहयोगी प्राध्यापक व विभाग प्रमुख,
पदवी, पदव्युत्तर राज्यशास्त्र विभाग,
ज्ञानोपासक महाविद्यालय, परभणी

प्रा. औचित्ये बी.सी.
कै.सौ. शेषाबाई सीताराम मुंढे कला महाविद्यालय, गंगाखेड, जि. परभणी

प्रस्तावना :

महाराष्ट्राच्या समाजकारणाचा व राजकारणाचा अभ्यास करताना समाजसुधारणेचा व सैध्दांतिक राजकीय विचाराचा एक व्यापक अवकाश आपल्यासमोर येतो. आधुनिक महाराष्ट्राच्या जडण-घडणीत अनेक समाजधुरीनांनी योगदान दिले आहे. त्यापैकी विशेषत: मराठवाड्याच्या राजकारणाला व समाजकारणाला प्रभावित करणारे व दिशा देणारे एक कर्ते सुधारक म्हणून बाबासाहेब परांजपे यांचा उल्लेख करता येतो. रुढार्थाने ते राजकीय वा सामाजिक विचारवंत नव्हते, परंतु त्यांनी आपल्या कार्यातून मराठवाड्याच्या आणि पर्यायाने संपूर्ण महाराष्ट्राच्या समाजकारण व राजकारणाला प्रभावित केले आहे. त्यांनी कुठलाही राजकीय सिध्दांत मांडला नसला तरी आपल्या आचरण व कृतीतून आदर्श राज्यकर्ता व समाज सुधारकाने कोणती कार्य केली पाहिजेत याचा वस्तूपाठच घालून दिला. आजच्या बदलत्या राजकीय व सामाजिक वातावरणात नीतीमत्ता, आदर्श नामशेष होत आहे. अशा स्थितीत ज्यांचे जीवन व वर्तन एक आदर्श म्हणून आजच्या नीतिमत्ता खालावलेल्या व मूल्यहीन राजकारण, समाजकारण, अशा परिस्थितीत मार्गदर्शक ठरु शकतात. म्हणून अभ्यासकांच्या दृष्टीने थोड्याशा दुर्लक्षित अशा बाबासाहेब परांजपे यांच्या सारख्या कर्मयोग्यांच्या राजकीय व सामाजिक कार्याचे अध्ययन करणे महत्त्वाचे आहे. त्यामुळे महाराष्ट्राच्या समाजकारणातील व राजकारणातील अज्ञात अशा विचारवंतांच्या कार्याचा महाराष्ट्राला परिचय होईल.

शोध प्रबंधाची उद्दिष्टे :

१. बाबासाहेब परांजपे यांच्या जीवन व कार्याची ओळख आजच्या युवापिढीस करुन देणे.

२. हैद्राबाद मुक्ती संग्रामातील बाबासाहेब परांजपे यांच्या योगदानाचा आढावा घेणे

३. वर्तमान समाजात सामाजिक व राजकीय जागृती करणे.

गृहितके :

१. हैद्राबाद मुक्ति संग्रामात बाबासाहेब परांजपे यांचे योगदान महत्त्वाचे आहे.

२. निजाम राजवटीतील सर्वसामान्य जनतेच्या मनात असणारी भितीची भावना दुर करुन सामान्य जनतेस निर्भय बनवण्याचे काम बाबासाहेब परांजपे यांनी केले.

३. महात्मा गांधीचा प्रभाव असतांनाही अपरिहार्यता म्हणून बाबासाहेब परांजपे यांनी सशस्त्र आंदोलनाचा मार्ग स्वीकारला.

४. हैद्राबादचा मुक्तिसंग्राम हा भारताच्या स्वातंत्र्य लढ्याचाच एक भाग आहे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधनासाठी प्रामुख्याने ऐतिहासिक, परिचयात्मक व विश्लेषणात्मक या पध्दतींचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच तथ्य संकलनासाठी व दुय्यम साधनांचा वापर करण्यात आला आहे.

हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात बाबासाहेब परांजपे यांचे योगदान :

साधारणत: १९३८ ते १९४८ हा दहा वर्षांचा कालखंड हैद्राबाद मुक्ती संग्रामाचा कालखंड समजला जातो. २४ ऑक्टो. १९३८ पासुन स्वामी रामानंद तीर्थ यांनी सर्वप्रथम निजामी राजवटी विरुध्द सत्याग्रहास सुरुवात केली. १७ सप्टेंबर १९४८ साली या लढ्याची सांगता झाली. हा लढा केवळ संस्थानाच्या विलीनीकरणाचा लढा नव्हता तर तो भारताच्या प्रादेशीक सलगतेच्या प्रयत्नांचा एक भाग होता. हा लढा महाराष्ट्राच्या इतिहासाचे सोनेरी पान आहे. या मुक्तीसंग्रामात अनेकांनी आपले योगदान दिले. त्या पैकी एक बाबासाहेब परांजपे होत. बाबासाहेब परांजपे यांचे संपूर्ण नाव रामचंद्र गोविंद परांजपे असे आहे. १ जुलै १९०७ साली त्यांचा जन्म रत्नागीरी जिल्ह्यातील अडीवरे या गावी झाला. शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर त्यांनी १९२८ साली मराठवाड्यात पदार्पण केले. हिप्परगा ता. तुळजापुर येथील एका राष्ट्रीय शाळेत त्यांनी शिक्षक म्हणुन आपल्या कार्यास सुरुवात केली. व नंतर १९३८ पासुन त्यांनी हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात सहभाग घेतला. या लढ्यातील त्यांचे योगदान पुढील प्रमाणे :

१. १९३८ चा सत्याग्रहात सहभाग :

हैद्राबाद स्टेट काँग्रेसचा जन्म होण्यापूर्वीच निजामाने या संघटनेस संपविण्याचा प्रयत्न केला व स्टेट काँग्रेसवर ८ सप्टेंबर १९३८ साली बंदी घातली या विरोधात जो सत्याग्रह करण्यात आला त्याला १९३८ चा सत्याग्रह तसेच वंदे मातरम चळवळ असे म्हणतात. या सत्याग्रहात बाबासाहेब परांजपे यांची भुमिका महत्त्वाची होती. त्यांच्या सोबत अंबेजोगाई येथील योगेश्वरी शाळेतील शिक्षक एस.आर.देशपांडे व संचालक नारायणराव जोशी यांनी शाळेतील विद्यार्थ्यांना सत्याग्रहासाठी तयार केले. या सर्वांनी खेडोपाडी फिरुन जनतेत राजकीय जागृती निर्माण केली तसेच सत्याग्रहासाठी निधी जमा केला. तरुणांमध्ये राजकीय प्रबोधन करुन या चळवळीत सत्याग्रही पुरविण्याचे महत्त्वाचे कार्य त्यांनी केले. स्टेट काँग्रेसवरील बंदी विरोधात गोविंदराव नानल यांच्या नेतृत्वाखाली पाच जनांच्या पहिल्या तुकडीने हैद्राबादेतील सुलतान बाजारात पोस्ट ऑफीस जवळ सत्याग्रह केला. हा सत्याग्रह म्हणजे निजामाविरुध्दचे संस्थानातील पहीले उघड आंदोलन होते. व विशेष म्हणजे या आंदोलनात वेगवेगळ्या उद्दीष्टांनी प्रेरित असलेल्या तीन शक्ती एकत्र आल्या होत्या. या तीन शक्ती म्हणजे हिंदू महासभा, आर्य समाज व हैद्राबाद स्टेट काँग्रेस होत.

१९३८ च्या सत्याग्रहामुळे अंदोलनास वेगळे वळण मिळाले. बाबासाहेब परांजपे यांच्या कार्याने संस्थानातील जनता राजकीय दृष्ट्या जागृत झाल्याचे दिसते. सर्वसामान्य जनतेच्या मनात निजामी राजवटीची भीती होती ती बऱ्याच प्रमाणात कमी झाली. अवघ्या दोन महिन्यांच्या काळात ४४८ सत्याग्रहींनी यात भाग घेतला अनेक तरुणांनी शाळा महाविद्यालये सोडुन स्वातंत्र्य संग्रामात उडी घेतली. पुढे म. गांधी यांच्या निर्णयामुळे २६ डिसें. १९३८ झाली हा सत्याग्रह थांबविण्यात आला. १९३८ च्या या सत्याग्रहाने बाबासाहेब परांजपे यांचा हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात अधिक सहभाग वाढला. व त्यांचे संघटन कौशल्य, प्रभावी वकृत्त्व हे गुण प्रकर्षाने दिसुन आले. या सत्याग्रहातील त्यांना आलेले अनुभव भावी काळातील लढ्यासाठी फायदेशीर ठरल्याचे दिसते.

२. शिक्षणातून राष्ट्रवादाचा प्रसार :

बाबासाहेब परांजपे यांनी प्रामुख्याने हिप्परगा व अंबाजोगाई या ठिकाणी शिक्षक म्हणून कार्य केले. यावेळी लोकमान्य टिळकांच्या चतु:सुत्रीतील राष्ट्रीय शिक्षण या घटकाचा त्यांच्यावर विशेष प्रभाव होता. यावेळी त्यांनी विद्यार्थ्यांना राष्ट्रीय शिक्षण दिले. पुस्तकी ज्ञाना व्यतीरिक्त त्यांनी विद्यार्थ्यांना जीवन दर्शनाचे धडे दिले. विद्यार्थ्यांना मॅझीनी, गॅरीबाल्डी, महाराणा प्रताप, छ. शिवाजी महाराज अशा महापुरुषांची चरित्रे वाचुन दाखवित. यामुळे विद्यार्थ्यांचे मन घडण्यास

हातभार लागला व देशभक्तीने वेडावलेले अनेक विद्यार्थी तयार झाले. पुढे याच विद्यार्थ्यांनी हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात मोलाची भुमीका बजावली यात प्रामुख्याने माजी खासदार तुळशीराम कांबळे, माजी मंत्री देवीसींग चौहाण, पुणे येथील ख्यातनाम प्रकाशक रा. ज. देशमुख व नागनाथ परांजपे यांचा उल्लेख करता येईल.

यावेळी एक गोष्ट प्रकर्षाने जाणवते ती म्हणजे बाबासाहेब परांजपे यांनी विद्यार्थ्यांना केवळ पुस्तकी ज्ञान दिले नाही तर राष्ट्रभक्ती, देशप्रेम यांचे पाठ दिले. अशा प्रकारे त्यांनी शिक्षणातून राष्ट्रवादाची निर्मिती केली. आदर्श शिक्षक कसा असावा हे त्यांनी दाखवुन दिले. विकासाच्या सर्व वाटा शिक्षणातुन जातात व विद्यार्थी हेच राष्ट्राचे आधारस्तंभ असतात हे त्यांनी दाखवुन दिले. थोर साहित्यीक वी. स. खांडेकर यांनी हिप्परग्याच्या या शाळेस भेट दिली होती. त्यांच्या "गोफ व गोफण" या लेख संग्रहात बाबासाहेब परांजपे यांच्या कार्याचा उल्लेख आढळतो.

३. १९४२ च्या आंदोलनात सहभाग :

भारताची स्वातंत्र्य चळवळ ऐन भरात होती या चळवळीत असहकार, सविनय कायदेभंग या अस्त्रांचा वापर झाला. मात्र ह्याचा फारसा परिणाम दिसुन येत नव्हता. शेवटी ९ ऑक्टो. १९४२ च्या मुंबई येथील अधिवेशनात महात्मा गांधी यांनी इंग्रजांना 'चलेजाव' चा इशारा दिला व संस्थानातील जनतेने पण यात सहभागी व्हावे असे आवाहन केले. याला प्रतिसाद म्हणुन बाबासाहे परांजपे यांनी या आंदोलनात सहभाग घेतला व आपले सहकारी शिक्षक व विद्यार्थ्यांसोबत अंबेजोगाई येथे एक दिवसाचे उपोषण केले. तसेच संस्थेच्या आवारात विदेशी कपड्यांची होळी केली. खेडोपाडी फिरुन जनजागृती केली व जनतेस स्वातंत्र्याचे महत्व पटवुन दिले. या सर्वांचा परिणाम असा झाला १० ऑगस्ट १९४२ साली बाबासाहेब परांजपे यांना अटक झाली व त्यांची रवानगी चंचलगुडा येथील तुरुंगात झाली. पुढे डिसेंबर १९४३ मध्ये त्यांची तुरुंगातुन सुटका झाली. यानंतर त्यांनी भुमीगत राहुन सशस्त्र आंदोलनात सहभाग घेतला.

४. सशस्त्र आंदोलनात सहभाग :

यानंतर अहिंसक मार्ग कमी पडले तेंव्हा या लढ्याचे रुपांतर सशस्त्र लढ्यात झाले. यावेळी बाबासाहेब परांजपे यांनी सशस्त्र आंदोलनाचा मार्ग स्विकारला. त्याकाळी शस्त्रे प्राप्त करणे अत्यंत अवघड काम होते. मुंबई येथे चोरुन शस्त्रे विकणा-या काही टोळ्या होत्या त्यांच्याकडून त्यांनी शस्त्रे प्राप्त केली. मात्र ही शस्त्रे खुपच महाग होती. एका हातबॉम्ब ची किंमत ५० ते ८० रुपये पडत असे यासाठी बाबासाहेब परांजपे यांनी त्यांचे धाकडे बंधू महादेव परांजपे यांची मदत घेतली. त्यांचे एक स्नेही दातार नावाचे गृहस्थ यांची ब्रिटीश लष्करातील अधिकाऱ्यांशी जवळीकतेचे संबंध होते. त्यांच्या मदतीने त्यांनी शस्त्रे प्राप्त केली. मात्र ही शस्त्रे पण महाग होती. म्हणून त्यांनी स्वत:च गावटी बॉम्ब तयार करण्याचे ठरवले व सोलापूर येथे बॉम्ब निर्मितीचा कारखाना सुरु केला. व हे बॉम्ब सरहद्दीवरील क्रांतीकारकांच्या कॅम्पवर पोहोचते केले.

सशस्त्र आंदोलनासाठी निधी जमा करताना बाबासाहेब परांजपे यांनी संस्थानातील धनिकांबरोबरच संस्थाना बाहेरील काही धनीकांची मदत घेतली. रझाकारांच्या अत्याचाराला कंटाळुन संस्थानातील अनेक श्रीमंत व्यापारी बार्शी, सोलापुर, पंढरपुर, वाशीम, पुणे येथे स्थायीक झाले होते. त्यांची मदत बाबासाहेबांनी घेतली याशिवाय लातूर येथील एक व्यापारी पुरणमल लाहोटी यांच्यासोबत बाबासाहेब परांजपे यांचे स्नेहाचे संबध होते. त्यांनी स्वातंत्र्य संग्रामात वेळोवेळी मदत केली. याशिवाय इंदुरचे संस्थानीक होळकर यांच्याकडुन बाबासाहेब परांजपे यांनी आर्थिक मदत मिळविली.

सारांश :

हैद्राबाद संस्थान हे भारत सरकारच्या लष्कारी कारवाईने स्वतंत्र झाले. निजामी लष्कर व रझाकार यांचे संख्यावल स्वातंत्र्य सैनिकांपेक्षा अधिक होते. तरी परंतू यात बाबासाहेब परांजपे यांचे योगदान नाकारता येत नाही. जनतेस खऱ्या अर्थाने निर्भय बनवण्याचे कार्य त्यांनी केले. गांधीवादाचा प्रभाव असतांनाही केवळ अपरिहार्यता म्हणून सशस्त्र आंदोलनाचा मार्ग निवडला.

निष्कर्ष :

१. हैद्राबाद मुक्ती संग्रामातील बाबासाहेब परांजपे यांचे कार्य मराठवाड्याचा स्वातंत्र्यासाठी उपयुक्त ठरले.

२. कुठलाही राजकीय वारसा नसताना त्यांनी मुक्तीसंग्रामात भाग घेतला व निजामी राजवटी विरुध्द लढा दिला.

३. रझाकार व निजामी लष्कर यांच्या तुलनेत स्वातंत्र्य सैनीकांची संख्या कमी असली तरी बाबासाहेब परांजपे यांचे योगदान नाकारता येत नाही.

४. बाबासाहेब परांजपे यांच्या कार्याने सामान्य जनतेच्या मनात असनारी दहशत नष्ट होऊन सामान्य जनता मुक्तीसंग्रामात सहभागी झाली.

५. शिक्षक म्हणुन बाबासाहेब परांजपे यांचे कार्य मुक्तीलढ्यासाठी उपयुक्त ठरले.

संदर्भ सुची :

१. भालेराव अनंत : "आलो याची कारणासी", विद्या प्रकाशन पुणे, प्रथमावृत्ती १९८५.

२. भालेराव अनंत : "हैद्राबादचा स्वातंत्र्य संग्राम व मराठवाडा", स्वा.रा.ती.संशोधन संस्था औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती १७ सप्टें. १९८७

३. भालेराव अनंत : "स्वामी रामानंद तीर्थ", साधना प्रेस, पुणे प्रथमावृत्ती, १९९८.

४.चपळगावकर नरेंद्र : "कहाणी हैद्राबाद लढ्याची", देशमुख आणि कंपनी पब्लीशर्स पुणे, प्रथमावृत्ती, १९९९.

५. चपळगावकर नरेंद्र : कर्मयोगी संन्यासी, मौज प्रकाशन मुंबई, प्रथमावृत्ती १९९९.

६. चारठाणकर विनायक (संपा.) : "स्वातंत्र्य संग्राम परभणी जिल्ह्याचे योगदान", साकार मुद्रणालय औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती १९९६.

७. चाकुरकर ल. बी. : "मी पाहिलेला हैद्राबाद मुक्तीसंग्राम", पी.आर. प्रिंटर्स लातूर. प्रथमावृत्ती १९८३.

८. दै. मराठवाडा : "पुज्य बाबासाहेब परांजपे आदरांजली अंक", दि. १२ मे १९९१.

❑❑❑

36

हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गलियारों में वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. अंकिता बोरा

विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के विकास के साथ इंग्लैण्ड सहित पश्चिम यूरोप के देशों में परम्परात्मक समाज के औद्योगिक समाज में रूपांतरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। रूपान्तरण की यह प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र गति से सम्पूर्ण विश्व में फैल गई। सम्पूर्ण विश्व को अपने में समेटने की यह प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाई। "वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपान्तर की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है, जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है।"[१]

वैज्ञानिक अविष्कारों की तीव्र गति के परिणामस्वरूप दूनिया की बीच की दूरी पट गई है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व एक दूसरे के निकटस्थ हो गया है। एक देश की घटना से दूसरे देश का व्यक्ति अप्रभावित नहीं रह सकते। यही कारण है कि विश्व सदैव आर्थिक रूप से जुड़ा रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क के कारण ही विदेशी साहित्य का प्रभाव हमारे साहित्य अर्थात् हिन्दी भाषा में परिलक्षित होता है। इस प्रभाव को नए साहित्यकारों ने बड़ी ईमानदारी के साथ स्वीकार किया है। अज्ञेय लिखते हैं– "प्रभाव कोई बुरी चीज नहीं है, हम सांस लेते हैं, उसमें बैक्टीरिया के अनेक जीवाणु हमारे भीतर चले जाते हैं, उससे स्वास्थ्य का कोई नुकसान नहीं होता, प्रभाव बुरा नहीं है, बशर्ते स्वास्थ्य अच्छा रहे अर्थात् प्रभाव से स्वास्थ्य में वृद्धि हो तो यह शुभ है।"[२]

Vol- 5 Issue-3
July2016

ISSN-2250-0383
IMPACT FACTOR - 0.421

SHODHANKAN

SHODHANKAN

Quarterly
International
Multi - Disciplinary
Refereed & Reviewed
Research Journal

Chief Editor
Dr. Radhakrishna Joshi

Principal
Late. Sow. Sheshabai
Sitaram Mundhe Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

INDEX

S.No.	Paper Name	Name	Page No.
१	Dominance Of Exotic Species In Pune And Pimpri Chinchwad Urban Area Of Maharashtra	Dr. Arvind B Patil, Department of Botany,	१ ते १८
२	गांधी विचार व राजनिती संदर्भ	डॉ. भोर रविंद्र लिंबाजीराव	१९ ते २१
३	Mental Health Benefits Of Sports	Prof. Kale B. G.	२२ ते २३
४	Portrayal Of Socio- Cultural/ Political Environment In Indian Cinema: A Critical Study Of Post 2001 Indian Cinema	Dr. V. L Dharurkar* Ashwin kumar B Sonone***	२४ ते २८
५	इतिहास लेखनातिक वस्तूनिष्ठता	प्रा. डॉ. जोशी आर. एल.	२९ ते ३३
६	मराठेकालिन तुरूंगव्यवस्था (शिवकाळ व पेशवकाळ—जुन्नर)	प्रा. वाघोले अरूणा रविंद्र	३४ ते ४३
७	Utility And Importance Of The Historical Sources	Dr. Sutawane Parimal Arvind,	४४ ते ४५
८	Study of Direct and Indirect Effect of Different Characters on Seed Yield of Chickpea (*cicer arietinum* l.)	Bhosale S. V[1]., Salunke C. B[2]., Deore G. N.[3], Kute N.S[4]. and Mhase L. B.[5]	४६ ते ५४
९	हिंदी नुक्कड नाटक — आज—कल	प्रा. डॉ. टाळके ए.बी.	५५ ते ५८
१०	Study Of Genetic Variability And Genetic Advance In Chickpea (*Cicer Arietinum L.*)	Bhosale S. V[1]., Salunke C. B[2]., DeoreG. N.[3], Kute N.S.[4] and Mhase L. B.[5]	५९ ते ६६
११	महिला आरक्षण आणि पंचायतराज	प्रा. बने रेखा रामनाथ डॉ. भागवत डी.आर.	६७ ते ६९
१२	नाशिक शहरातील स्त्रीयांच्या सामाजिक सुधारणाचा अभ्यास	·प्रा. रुपवते जी.डी. प्रा.डॉ. खैरनार के.के.	७०ते ७२

Principal
Late. Sow. ...eshabai
Sitaram Munde Art's College
Gangakhed Dist Parbhani

POLITICS
ISSN – 2250-0383
RNI-02988/13/01/2011-TC

महिला आरक्षण आणि पंचायतराज

प्रा.बने रेखा रामनाथ
राज्यशास्त्र विभाग
कै.सौ.शेषाबाई सिताराम मुंढे
कला महाविद्यालय, गंगाखेड

डॉ.भागवत डी.आर.
राज्यशास्त्र विभाग
कै.सौ.कमलताई जामकर महिला
महाविद्यालय, परभणी

प्रस्तावना :

लिंग, जात, वर्ग, भेदभावमुळे वंचित राहिलेल्या समाजघटकाला मुख्य प्रवाहात आणण्यासाठी अधिसत्तेने आरक्षणाचे धोरण सर्वच स्तरावर स्वीकारले आहे. भारतात ब्रिटिशांच्या विरोधातील चळवळीमुळे स्वातंत्र्यानंतर या घटकांना मतदानाचा हक्क प्राप्त झाला खरा पण हा स्त्रियांचा मतदानाचा हक्क मतदानाच्या पलीकडे जाऊ शकला नाही.

जहाल स्त्रिवाद्यांनी मातृत्वाला नकार देत तसेच विवाहसंस्था नाकारून भगिनीभावाचा मुद्दा मांडला. त्यामुळे पितृसत्ताक व्यवस्थेला बसलेला हादरा आणि राजकीय सहभागाची आवश्यकता भासल्याने १९८० नंतर आरक्षणाचे विधेयक मंजुरीच्या दृष्टीने प्रयत्न सुरु झाले. तसेच आंरराष्ट्रीय पातळीवरूनही महिलांच्या राजकीय सहभागासाठी आरक्षणाची शिफारस केल्या जात होती. अशा अनेक घटनामधून सरकारला किंवा अधिसत्तेला स्त्रियांच्या विकासासाठी तसेच स्थानिक पातळीवरील नेतृत्व विकसीत करण्यासाठी पावले उचलने भाग पाडले. स्त्रियांच्या आरक्षणाचा मुद्दा मान्य करावा लागला.

पंचायतराज मध्ये महिला आरक्षणाची उद्दिष्टे :

१) स्थानिक पातळीवरील महिला नेतृत्व विकसीत करण्यासाठी.
२) धोरणात्मक राजकीय पातळीवरील महिलांचा सहभाग वाढविण्यासाठी.
३) निर्णय प्रक्रियेत महिलांना महत्त्वपूर्ण भूमिका बजाविण्यासाठी.
४) पुरुषप्रधान राजकीय व्यवस्थेला पर्याय निर्माण करण्यासाठी.
५) महिलामध्ये राजकीय जागृती निर्माण करणे.
६) महिलांचा सर्वांगिण विकास साध्य करणे.

७३ वी घटनादुरुस्ती :

या घटनादुरुस्तीनुसार भारतीय संविधानात ९ व्या भागात ११ व्या परिशिष्टात कलम २४३ समाविष्ट करण्यात आले. यानुसार पंचायतराज संस्थांकडे २९ बाबी हस्तांतरित करून पंचायतराज संस्थांना वैधानिक दर्जा देण्यात आला. तसेच त्यांचा कार्यकाल, आरक्षित जागांची तरतूद करून महिलांसाठी आरक्षणाची तरतूद करण्यात आली. अनुसूचित जाती व जमातीसाठी त्यांच्या लोकसंख्याच्या प्रमाणात तर महिला १/३ जागा राखीव ठेवण्यात आल्या.

पंचायतराज व ५० टक्के महिला आरक्षण :

महिलांचा दर्जा सुधारावा आणि स्थानिक पातळीवर त्यांच्या नेतृत्व गुणांचा विकास व्हावा यासाठी महिलांना स्थानिक स्वराज्य संस्थात आरक्षणाची तरतूद लागू करण्यात आली.

केंद्रिय कॅबिनेटने राज्यघटनेतील कलम २४३ डी मध्ये दुरुस्ती करण्यासाठी मान्यता दिली. २७ ऑगस्ट २००९ त्यानंतर २६ नोव्हेंबर २००९ रोजी घटनादुरुस्ती विधेयक ११० वे लोकसभेत पंचायतराज मंत्री

सी.पी. जोशी यांनी सादर केले. त्याचबरोबर महिलांना नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये वाढीव आरक्षणाकरिता ११२ व्या विधेयकाद्वारे राज्यघटनेतील कलम २४३ डी मध्ये दुरुस्ती करण्यात येणार आहे. या विधेयकाद्वारे महिलांना स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये राखीव जागाचे प्रमाण ५० टक्के होणार आहे पण सध्या हे विधेयक लोकसभेत प्रलंबित आहे. याला भारतीय महिलांचे दुर्दैव म्हणावे लागेल पण सुदैवाने महाराष्ट्र शासनाने आपल्या राज्यात स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये महिलांना ५० टक्के आरक्षण लागू केले आहे. कलम २४३ डी मध्ये दुरुस्ती करण्यात आली आहे.

आंतरराष्ट्रीय स्थितीनुसार भारतीय महिलांचा दर्जा :

१९८० पर्यंत आरक्षणाच्या बाबतीत महिला प्रतिनिधीचाच दृष्टीकोन नकारात्मक राहिलेला दिसून येतो. १९७५ साली नेमलेल्या कमिटी ऑन द स्टेटस ऑफ वुमेन इन इंडिया या समितीत पण महिला आरक्षण विधेयकास नकार देण्यात आला होता. त्यामुळे महिला आरक्षण धोरणाच्या मुद्याला उशीर झाला असे म्हणता येईल.

भारत देशाच्या सर्वश्रेष्ठ पदावर राष्ट्रपती, पंतप्रधान आणि लोकसभा सभापतीपदी महिलांची निवड झाली. पण अमेरिकासारख्या देशात स्वातंत्र्याचा जाहिरनामा पहिल्यांदा मांडणाऱ्या अमेरिकेत राष्ट्राध्यपदी महिलेस संधी मिळाली नाही. म्हणून इतर राष्ट्राच्या तुलनेत भारताची स्थिती चांगलीच म्हणावी लागेल. भारताची स्थिती चांगली असली तरीही अनेक मागास राष्ट्रही भारतापेक्षा आघाडीवर आहेत.

स्थानिक स्वराज्य संस्थातील महिला आरक्षणाचे परिणाम :

स्थानिक स्वराज्य संस्थातील महिलांच्या असणाऱ्या सहभागांचे परिणाम सकारात्मक आल्याचे दिसून आले. इरम क्लॉटस यांच्या मते, महिला प्रतिनिधीचा विकासकामाचा अजेंडा हा पुरुषापेक्षा वेगळा आहे. महिला प्रतिनिधी शिक्षणावरील खर्च, सामाजिक कार्यक्रम राबवणे, महिला अधिकाराचे रक्षण करणारे कायदे बनवणे व नागरिकांच्या दैनंदिन गरजा यांना प्राधान्य देताना दिसतात.

कर्नाटक, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल व केरळ या राज्याच्या केलेल्या अभ्यासातून असा निकर्ष पुढे आला की महिला सदस्य असलेल्या निधीचा वापर योग्य कामासाठीच करतात.

पंचातराज संस्थेतील महिला सदस्यामुले भ्रष्टाचार खूप प्रमाणात कमी झाला आहे. अशा प्रकारे महिला नेतृत्वाचा सकारात्मक हस्तक्षेप हा लोकांची मान्यता आणि मानसिकता बदलविण्यास यशस्वी झाला आहे. सकारात्मक परिणाम झाला असला तरीही काही नकारात्मक पैलूही पंचायतराज व्यवस्थेत असल्याचे दिसून आले. जसे महिलांच्या नावाचे नेतृत्व स्वतःकडेच घेणे, जाती व्यवस्थेचे बंधन व आज्ञानामुळे त्यांची फसवणूक करणे असे एक नाही बरेच दोष दिसून येतात. याचाच अर्थ असा की जुनीच भूमिका नवीन उत्तरदायित्व अशा नकारात्मक परिणामाला बदलून सकारात्मक दृष्टिकोनाला विकसीत करण्यासाठी शासनाला आणि स्वतः महिलांनाही प्रयत्न करावे लागतील.

१. केवळ नुसते साक्षर होऊन चालणार नाही तर शैक्षणिक गुणवत्तेचा दर्जा सुधारून स्वतःचा आणि देशाच्या विकासासाठी प्रयत्न करावे लागतील.
२. पंचायतराज प्रतिनिधीच्या वेळोवेळी होणाऱ्या बैठकीला हजर राहून गावातील प्रश्न सर्वांसमोर मांडून सोडवावे लागतील.
३. पुरुषप्रधान संस्कृतीला व महिलांचे नेतृत्व स्वतःकडे घेणाऱ्या पुरुषांना आव्हान द्यावे लागणार या सर्व प्रश्नाची उकल महिलांनाच करावी लागणार.
४. पंचायतराज संस्थामध्य महिलांचा सहभाग हा केवळ महिला नेतृत्व विकसीत करण्यासाठी नसून लोकशाही बळकट करण्यासाठी आणि स्त्रियाही पुरुषापेक्षा कमी नाहीत हे दाखविण्यासाठी आवश्यक आहेत.

लोकशाहीभिमुख राजकारणासाठी पंचायतराज संस्थातील महिलांचा राजकीय सहभाग एक महत्त्वपूर्ण साधन म्हणून परिणामकारक ठरल्याचे दिसून आले आहे. शासनाने फक्त पंचायतराजमध्येच नव्हे

तर सर्वच अधिसत्तेच्या स्तरावर आणि प्राधिकरणात महिलांना ५० टक्के आरक्षण लागू करावे कारण महिला पण पुरुषापेक्षा कमी तर नाहीतच सरस ठरलेल्या समोर आले आहे.

पंचायतराजमध्ये महिला आरक्षणामुळे पादर्शकता, जबाबदार शासन, लोकशाही मूल्यांना बळकटी महिलांच्या नेतृत्वामुळे येण्यास मोलाची भर पडत असल्याचे दिसून आले आहे. महिलांच्या विकासासाठी महाराष्ट्र शासनाने पंचायतराजमध्ये ५० टक्के आरक्षणाची अट लागू केल्याप्रमाणे इतर राज्यांनी आणि केंद्रिय कॅबिनेट राज्यघटनेत सुधारणा होऊन आरक्षणाविषयी घटनादुरुस्ती विधेयक मंजूर करणे गरजेचे आहे.

संदर्भसूची :

१. जाधव तुकाराम, शिरापूरकर महेश, भारतीय संविधान व भारतीय राजकारण, युनिक अॅकाडमी, पुणे.
२. वाधवा शालिनी, भारतीय स्थानिक प्रशासन, अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली.
३. डॉ.सिंह निशांत, महिला राजनिती और आरक्षण, ओमेगा पब्लिकेशन, दिल्ली.
४. मोदी अनिता, पंचायतराज एवं महिला सशक्तीकरण, बुक एनक्लेन प्रकाशन, जयपूर.
५. लोकराज्य, मार्च २०१२.

THE CONTEXT

a peer reviewed, international e journal
of language, literary and cultural studies

ISSN 2349-4948

Volume 3 Issue 3-4 October 2016

Chief Editor
Kumar Wani

MAGNUS
PUBLISHING

The Context
Quarterly e journal of language, literary and cultural studies
Publication details and instructions for authors:
http://www.magnuspublishing.com

This is an Open Access Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License:
CC BY-NC-ND 4.0

New Woman in Sane Guruji's Short Story, 'Manubaba'

Mr. Rajiv N. Aherkar

Assistant Professor, Department of English,
Late Sow S.S. Mundhe College, Gangakhed Dist. Parbhani-431514(M.S.)

Published online: 05 October 2016

Article Number: TCissn.2349-4948/3.3-4RA

To cite this article: Aherkar, R N. "New Woman in Sane Guruji's Short Story, 'Manubaba'". The Context, 3.3-4 (2016): 175-180. Web.

© 2016 Author(s); licensee Magnus Publishing.
The electronic version of this article is available at:
http://www.magnuspublishing.com/thecontext/2349-4948-RA.pdf

Abstract

The present paper is an attempt to present Sane Guruji's perspectives on women portrayal in the short story, 'Manubaba'. Sane Guruji is a well-known writer in Marathi literature. Through his short stories, he presented the image of the new women who struggles for their identity and space in the family as well as in the society. His short stories present the traditional woman as well as courageous woman who struggle for her identity. The present paper investigates the image of a new woman who fights for identity and space. The woman character, Soni is presented in the short story as a new woman who overcomes from male domination and challenges the traditional image of woman as well as evil social system.

Keywords: *New Woman, Male Domination, Tradition, Modernity*

ISSN 2349-4948

New Woman in Sane Guruji's Short Story, 'Manubaba'

Mr. Rajiv N. Aherkar

The door of education opens with the great efforts of social activists like Mahatma Jyotiba Phule and like others who have opened the doors of education for women. The feminists struggle for empowerment of woman. The struggle of woman for liberation from male dominated social system is reflected through the writings of contemporary writers. Sane Guruji presents the social evils like male domination, dowry, suppression of woman, victimization of woman, superstitions through his short stories and projects a new woman who either boldly or coldly reacts against these social evils and tries to find her identity in the family as well as in the society.

The story, *Manubaba* is based on the novel, *Sails Mariner* written by George Eliot. Sane Guruji through this short story gives the message that self-centered life is useless whereas the life which is dedicated to human service is useful. The central character of the story is Manubaba, a weaver but the writer presents three types of women; a weak woman, a submissive woman and self-respecting new woman. These women are the victims of the tradition as well as male dominated society. The writer narrates the story and allows the characters to speak. The weak woman is presented through the character of Soni's mother, the submissive woman is presented through the character of Indumati and the new woman is presented through the character of Soni, daughter of Sampatrai. These three female characters suffer a lot in the male dominating society. Soni finds her own identity in the male dominated society, Indumati manages herself in the male dominated society and Soni's mother sacrifices herself due to rude traditional system.

Manu (*Manubaba*) leaves his native place because his close friend, Vinu cheats him. He starts living in another village, Raygaon where he earns for life by weaving. He lives a lonely life. He has no friends nor does he visit the villager for chat. He weaves all the day. His hut is outside the village. His life becomes a machine. The villagers call him Manubaba. In the village there is a rich man, Digambarrao who has two sons; Sampatray and Dhaksen. Sampatray is a good-natured comparing to his younger brother Dhaksen. Digambarao wants Sampatrai to get married and he asks Sanpatrai to get marry because Digambarrao knows better that wife has a vital role in life of the man. He says to his son;

> घरात सून म्हणजे घराला शोभा येईल, घरात आनंद येईल. स्त्री घर म्हणजे घरपणा वाटतो. घराला घरपणा स्त्रियांशिवाय नाही. करतोस का लग्न?'(Sane Guruji, 2012:P-13)

A woman is the dignity of house. Her presence brings happiness and neatness to the house. Without a woman, the house seems unstable. Are you ready for marriage? (Translated)

Digambarrao's views about the daughter-in-law indicate that Digambarrao understands the importance of a woman in the family. Here the first time writer introduces the submissive woman, Indumati who waits for the acceptance for marriage from a boy. And she waits till his acceptance. The writer clears that the view of the contemporary society about the woman as a housewife. On the other hand, Thaksen cheats his brother and demands money for his daily expense. He blackmails his brother because he knows the secret of his brother that he has a beloved. When his brother refuses to give him money, he sells his brother's horse and steals Manubaba's gold coins and meets a tragic death. Manubaba after the loss of the gold coins behaves like a mad man but his neighbor, Salubai consoles him. Salubai touches his heart and he realizes that he has a human heart which he has lost by the shock of his friend's cheating and the loss of the gold coins. The narrator describes;

> हृदयाचे बंद दार जरासे किलकिले झाले. ते दार गंजून गेले होते. परंतु साळूबाईच्या षब्दांतील स्नेहाने गंज निघून गेला. दार जरा उघडले. थोडासा प्रकाष हृदयात षिरला.(Sane Guruji, 2012:P-22)
>
> The closed doors of his heart are opened slightly. The tender words of Salubai plays magic and the optimistic rays are entered. (Translated)

The tender words of a woman become responsible to change the life of a man (Manubaba) who lives a lonely life and gives importance to earn money but the advice of Salubai effects on Manubaba and after Salubai's simple words make him aware of human feeling and help him to come out from the shock of the loss of the gold coins. He starts to work again to collect coins and tries to live a public life. On the day of *Diwali* (a festival of lights), Manubaba on the request of Salubai lights a few lamps but he is restless. Near the hut of Manubaba there is a woman with her little child tries to walk but it gets her difficult. Her position is described by the narrator as;

> ती पहा एक अनाथ स्त्री. एका लहान मुलाला वक्षःस्थळाशी धरून जात आहे. तिच्या अंगावर फाटके लुगडे आहे. तिचे हृदयच फाटलेले आहे. डोळ्यांतून पाणी गळत आहे. ती तरुण आहे. ती सुंदर आहे. परंतु तिचे तारुण्य व तिचे सौंदर्य कळाहिन दिसत आहे. जगाने तिची वंचना केली आहे. कोणी तरी पाप्याने तिला फसविले आहे (Sane Guruji, 2012:P-25)
>
> Look at the helpless woman with a little baby. She has a tattered *Sari* and she is weeping. She is a beautiful and young woman but she looks charmless and seems that a sinner has cheated her. She is a simple and innocent woman. She is tired of waiting and facing the comments of the people. (Translated)

The narrator describes her helpless condition. As a woman she is weak in the male dominated society. She is a victim of the male dominated society. She has no power to fight for her rights and she says;

> आज त्याच्या घरी लक्ष्मीपूजन असेल. मोठा थाटमाट असेल. समारंभ होत असेल. शेकडो स्त्री–पुरुष आले असतील. अशा वेळेस तिथे जाऊन मी उभी राहीन. सा–या जगासमोर त्यांचं पाप उघडं करीन. त्यांच्या आनंदात विष ओतीन. मी त्याची गृहलक्ष्मी. परंतु मला इकडे रखत ठेवतात. मी गरीब घराण्यातील असले म्हणून काय झाले? गरिबांना का अब्रू नसते? मी गरीब होते, तर आले कशाला माझ्याजवळ? केवळ का माझी कातडी पाहून भुलले? किडे मेले. दुष्ट आहे पुरुषांची जात. मला पण सूड घेऊ दे. सा–या जगासमोर त्यांचं हिडीस स्वरूप उघडं करते.(Sane Guruji, 2012:P-25-26)

ISSN 2349-4948

> Today there is *Laxmipooja* in his house. A celebration will be there and in the gathering I will expose his secret. I am his *Grahlaxmi* but he keeps me away from the house because I belong to the poor family. Does it mean that the poor does not have dignity? Why he used my beauty if I am a poor. He is a cheater and I will expose his sin to the world. (Translated)

She thinks to express her sorrow to the world. She decides to reveal how she is being victimized by the man. But as a weak woman she prefers to die rather to fight for her right. She takes poison and with her little child she walks towards the village. The power of the poison effects on her body and she dies. Before her death she takes care of her little child. As a caring mother she wraps the child in her *Sari* to protect the little baby from the cold but as a weak mother she dies leaving her child as an orphan. The little child sees the light coming out of Manubaba's hut, the child crawls towards the hut leaving the dead mother. When Manubaba takes the child, he feels very happy. He thinks that his lost gold is back. When he comes to know that the helpless mother of the child is dead, he goes to Digambarao and tells all the story of the dead woman and her little child. Digambarrao and his son Sampatrai with villagers come to see the woman. They find the woman dead. Sampatrai knows the dead woman and the little child but out of fear of tradition he cannot accept the truth. He gives money for the funeral of the dead woman. Salubai expresses her views about Sampatrai as;

> किती थोर तुमचं मन. श्रीमंतांची मनही जर अशा श्रीमंत असतील तर जगात दुःख दिसणार नाही. (Sane Guruji, 2012:P-30)

> How great you are. If the rich man has such a king and generous heart, there will be no suffering in the world. (Translated)

Salubai does not aware about the secret of Sampatrai. Sampatrai is not as reach as to accept the truth that the dead woman is his beloved and the little child as his own daughter. In real sense, Sampatray is the murderer of the woman. The dead woman is a victim of male dominated society. He is responsible for her death and orphanage of her daughter.

Sampatrai marries Indumati. She takes care of the house as well as father and her husband. Her husband is so impressed by her work. Sampatrai and Indumati live happily. She is an obedient wife. She always obeys her husband. He says her that the life without woman is life without happiness. A woman is goddess of beauty, she keeps house tidy. The women are the music of life. She is pleased by the praise of her husband. Sampatrai's father also is satisfied after marriage of his son with Indumati. He advises them not to give chance for hate in their life, believe each other and do not quarrel. The view of Digambarrao shows that he believes in human bondage. Before his death, he advises Indumati and his advice shows that he has faith in his daughter-in-law, Indumati. Her devoted work at her-in-laws' house wins the faith of her father-in-law. Indumati is an obedient daughter, a faithful wife and a good daughter-in-law. She works at the will of other and finds happiness in the work. She is a perfect model of a traditional submissive woman. When her husband confesses his sin that he keeps

the secret of his love for a woman and he has a daughter from her. He cannot accept her because she is a lowborn and his father will not accept her as daughter-in-law. He says;

> इंदू, तुझा पतीही निर्दोष नाही. हा संपतराव निष्पाप नाही. मी तुझ्या बरोबर लग्न करणं लांबणीवर टाकीत होतो, ही गोष्ट तुला आठवत असेल. मी एका मुलीच्या प्रेमात अडकलो होतो. तिच्याजवळ मी गुप्तपणे लग्न लावलं होतं. एका गावात एक घर भाड्यानं घेऊन तेथे तिला ठेविली होती. ती मुलगी गरिब घराण्यातील होती. आम्ही मोठ्या घराण्यातील. बाबांनी त्या मुलीजवळ लग्न लावायला कधीही संमती दिली नसती. मलाही उघडपणे त्या मुलीला माझी पत्नी म्हणून इथं आणण्याचं धाडस झालं नाही. समाजाच्या टीकेला मी भ्यालो. खोटे श्रेष्ठकनिष्ठाचे बंद. त्यांना मी बळी पडलो. (Sane Guruji, 2012:P-48)
>
> Indu, your husband is not innocent. You would remember that I delayed to get marry you because I fell in love with one girl even, I married but without telling my parents. I know that my family background belongs to a rich and the girl belongs to a poor family so my father definitely would not give permission to our marriage. Really, I afraid and do not have courage to face comments of traditional and orthodox people. So, I become a victim of this traditional rude system. (Translated)

He tells her that he could not marry the girl because of social dogmas. But she dies for him, for his false pride to keep his position unstained. He is a sinner. But Indumati forgives him and accepts him. She says;

> असो. झालं ते झालं. तुम्ही व मी आता अलग नाही. पंधरा वर्षं एकत्र राहिलो. तुम्हाला मी कशी तुच्छ मानू? तुम्ही जणू माझे झाले आहात. तुमचा तिरस्कार करणं मी माझाच तिरस्कार करण्यासारखं आहे. जाऊ देत जगात निर्दोष कोण आहे? पापाचा पश्चाताप झाला म्हणजे पुरे.(Sane Guruji, 2012:P-49)
>
> Let it be. It is your humbleness that you confess truth otherwise I would not know anything. You and I would not depart henceforth. We live together last fifteen years and you are mine. If I hate you that means I hate myself and no one is innocent in this world. It is fair that you repent on your follies and it is enough. (Translated)

Indumati's forgiveness to her husband indicates her image as traditional Indian wife who accepts her husband without any complain besides his faults. The writer creates her image as a traditional Indian submissive woman who accepts her husband with his sin and respects him.

On the other hand, under the caring of Manubaba, Soni grows up. She and Ramu, son of Salubai play together. Ramu proposes Soni for marriage. She accepts his proposal but thinks of Manubaba after her marriage he will be alone again. Her thinking of Manubaba indicates that she is ready to marry Ramu if he will ready to live together with Manubaba. She does not ready to leave her parents' house after marriage. Like a new woman she wants her helpless parents with her even after her marriage. And her proposed husband is ready to accept her proposal.

One day Sampatrai with his wife, Indumati comes to Manubaba and confessed the truth to him that Soni is his daughter and requests Manubaba to give her daughter to him. When Soni knows it she says;

> 'जन्मदात्यापेक्षा या प्राणदात्याची अधिक आहे. जन्मदात्याने जन्म दिला व जगात उघडे ठेवले. माझ्या आईला जगात उघडे ठेवले, मनूबाबांनी माझे सारे केले. त्यांनी आज पंधरा वर्ष मला वाढविले. ..... मी लहान होते, अनाथाप्रमाण हात पसरीत या गावात आले. या गावात संगत आले. त्यावेळेस तुम्ही मला का नेले नाही? तुम्ही नेत होते परंतु एका अनाथाची मुलगी म्हणून नेत होतात. ' ही माझी मुलगी आहे. आणि ही मरुन पडलेली माझी पत्नी आहे' असे त्या वेळेस जगाला का सांगितले नाही?.....प्रेमापेक्षा कुलाची व धनाची खोटी प्रतिष्ठा तुम्हाला अधिक मोलाची वाटली. काय करायची ती श्रीमंती? चुलीत घाला ती श्रीमंती. जो श्रीमंती माणूस ओळखीत नाही, प्रेमाला ओळखीत नाही, कर्तव्य ओळखीत नाही, ती श्रीमंती पै किंमतीची आहे. त्या श्रीमंतीची मी कपाला वाटेकरीन होऊ? मीही मग पैपाला मोठं मानायला बिकेन व मानुसकी पायाखाली तुडवीन. मी मग रामूबरोबर लग्न करायल होईन का तयार?(Sane Guruji, 2012:P-55-56)

> The survivor is greater than one who gives birth. My mother gave birth to me but Manubaba nurtures me till the age of fifteen. I was an orphan when I came into this village but Manubaba showed his courage to accept me as his daughter. It is shame to tell that being you are father of mine; you hesitated to offer me dignity as a daughter in the society because you give more importance to prestige and heritage of family. Really one who does not know importance of love he would fall short to complete his moral duties also. So it is better to marry Ramu who is a poor. (Translated)

Like a new woman she enjoys her freedom of choice and rejects the proposal of her father, his wealth and ready to live a life in hut with her proposed husband Ramu. She hates the wealth which hates the poor and divides the society in to fragments of lower and upper class. She accepts Ramu as her husband besides his poverty. She is firm on her decision to marry with Ramu. Soni's rejection of her father's proposal and selection of her would be husband clearly indicates that the writer projects her as a new woman who enjoys her freedom of choice besides all the diverse condition. Sampatray and her wife Indumati return back without Soni. The dream of Indumati to be a mother of Soni remains unfulfilled. After the marriage of Soni with Ramu, Manubaba lives with them happily.

Works cited

Dekhane Ramchandra, (2011), 'Jivan Yogi Sane Guruji' Padmgandha Prakashan, Pune.

Nemade Bhalchandra (Ed.), (2014), 'Sane Guruji Punarmullyankan', Sahitya Akademi, New Delhi.

Sane, Guruji, (2012) *Sane Gurujinchya God Gosti-3: Manubaba*, K.B. Dhavle, Mumbai.

Varada Publication (2011), 'Sampurn Sane Guiruji Volume 44, Sane Guruji Vishayi', Varada Publication, Pune.